

# आर्य जगत्

कृष्णन्तो विश्वमार्यम्



दिवांग, 10 अगस्त 2014

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह दिवांग 10 अगस्त 2014 से 16 अगस्त 2014

आशु. पूर्णिमा ● विं सं०-२०७१ ● वर्ष ७९, अंक १२०, प्रत्येक मग्नलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द १९१ ● सृष्टि-संवत् १,९६,०८,५३,११५ ● इस अंक का मूल्य - २.०० रुपये

## डी.ए.वी. कालेज जालन्धर में नए शैक्षिक सत्र का शुभारम्भ

**डी.** ए.वी. कालेज जालन्धर में नए शैक्षिक सत्र

2014-15 का शुभारम्भ हवन यज्ञ आयोजन से किया गया जिसमें कालेज के प्रिंसीपल डॉ. बी.बी. शर्मा, स्टाफ के सदस्य, विद्यार्थी एवं शहर के कई अन्य गणमन्य व्यक्ति उपस्थित हुए। इस अवसर पर बठिण्डा से स्वामी सूर्यदेव जी विशेष रूप से अपने शुभ प्रवचन देने के लिए पधारे। डॉ. बी.बी. शर्मा ने सभी विद्यार्थियों के उज्ज्जल भविष्य की मंगल कामना की और कहा कि बहुत ही भाग्यशाली हैं जो डी.ए.वी. कालेज जालन्धर जैसे महान् शैक्षिक संस्थान में शिक्षा प्राप्त करने के लिए



आये हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को पूरी लगन के साथ पढ़ाई करने की प्रेरणा दी और अपने कालेज और माता-पिता का नाम रोशन करने के लिए कहा।

इसके बाद स्वामी सूर्यदेव जी ने भी अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमें वैदिक परम्पराओं की पालना करते हुए जीवन में उच्च स्थान को प्राप्त करने

का प्रयत्न करना चाहिए। इस अवसर पर प्रिंसीपल श्री ए.ए.ल. सांगल, प्रिंसीपल वीना विलियम्स, प्रिंसीपल श्री राजकुमार सहगल, प्रिंसीपल जितेन्द्र शर्मा, प्रिंसीपल जगरूप सिंह, श्री सी.ए.ल. कोछड़, श्री अरविन्द घई, श्री ओम प्रकाश महाजन, कमेटी के प्रधान श्री कुंदन लाल अग्रवाल, श्री मायर, वाइस-प्रिंसीपल पी.के. कपूर, पी.के.शर्मा, राजिस्तार रवि मनूजा, प्रो. जीवन आशा, प्रो विपन झांसी (पी.आर.ओ.), स्टाफ सचिव संजीव धवन, डॉ संजीव शर्मा, अशोक खुराना, अनुराग शर्मा, प्रवीण शर्मा, टी.डी. सैनी, सी.बी. शर्मा सहित स्टाफ के अन्य सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित थे।

**मै**

कल की पहाड़ी से निस्सरित कल्लोल कल्लिनी सोन नदी के पावन तट पर स्थित कोयलांचल के एक मात्र सह-आवासीय विद्यालय, डी.ए.वी. बुद्धार पब्लिक स्कूल, बुद्धार में गुरु पूर्णिमा महोत्सव माननीय चैयरमेन श्री सी.ए.ल सरावगी जी की मुख्य अतिथि में अत्यन्त ही धूम-धाम से मनाया गया। अतिथि महोदय एवं विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती विजय लक्ष्मी नायडू जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम प्रारम्भ करने की शुरुआत की। प्रारम्भ में संस्कृत शिक्षक आर्य श्री पी.एन.शर्मा

## गुरु पूर्णिमा महोत्सव



जी द्वारा वैदिक अनुष्ठान करवाया गया। की प्राचार्या श्रीमती विजय लक्ष्मी नायडू अपने आशीर्वाद उद्बोधन में विद्यालय जी ने गुरुमहत्ता पर प्रकाश डालते हुए समाप्त हुआ।

कहा—जो मुनष्यों को किसी भी शब्द के अन्तर्निहित ज्ञान का बोध कराता है तथा जो छात्रों की समस्या के समाधान के लिए सदा उद्यत रहता है उसे ही गुरु की संक्षा दी गई है। जो व्यक्ति सदा गुरुओं का सम्मान करता है उसकी आयु विद्या, यश और बल ये चारों चीजें स्वतः ही बढ़ती हैं।

विद्यालय के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा सभी गुरुओं को श्रीफल भेटकर सम्मान किया गया तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया।

शांति पाठ के साथ ही कार्यक्रम का

## डी.ए.वी. कॉलेज फिरोजपुर में शैक्षणिक सत्र का शुभारम्भ हवन यज्ञ से

**डी**

ए.वी. कॉलेज फॉर वूमेन, फिरोजपुर कैंट में शैक्षणिक सत्र 2014-15 का शुभारम्भ प्रिंसिपल डॉ. पुष्पिंदर वालिया की अध्यक्षता में हवन यज्ञ से किया गया। इस यज्ञ में स्थानीय समिति के सदस्य पं. सतीश शर्मा व श्रीमती स्वर्ण चावला ने भाग लिया। यज्ञ का संचालन श्री मनमोहन शास्त्री ने वैदिक मंत्रोच्चारण से किया।

प्रिंसिपल डॉ. वालिया ने सत्र 2013-14 में यूनिवर्सिटी की वार्षिक

आशीर्वाद दिया।

इस यज्ञ में समस्त स्टाफ व

छात्राओं ने भाग लिया। शान्ति पाठ से यज्ञ सफलतापूर्ण सम्पन्न हुआ।



# आर्य जगत्

ओ३म्



सप्ताह रविवार 10 अगस्त, 2014 से 16 अगस्त, 2014

## स्मित्पर्णि शिष्य के उद्घाटन

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।  
आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय॥

ऋषि: ब्रह्मा | देवता अग्निः छन्दः अनुष्टुप्।

● (अग्ने) हे यज्ञाग्नि! (एताः) ये (ते) तेरे लिए (समिधः) समिधाएँ [हैं], [इनसे] (त्वं) तू (इत्) निश्चय ही (सम् इद्धः) संदीप्त (भव) हो। (अस्मासु) हम [इनसे] (त्वं) तू (इत्) निश्चय ही (सम् इद्धः) संदीप्त (भव) हो। (अस्मासु) हम [ब्रह्मचारियों] में (आयुः) जीवन, [और] आचार्याय (आचार्य) के लिए (अमृतत्वम्) अमरत्व (धेहि) प्रदान कर।

● मैं समित्पर्णि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक-एक कर अग्नि में आहुति दूंगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य-रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्म से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध-अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल-वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि!

तू गुरुकुल की गुरु-शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

## दो दास्ते

● महात्मा आनन्द स्वामी



स्वामीजी ने बताया कि प्रकृति का नियम अटल है और यह नियम कभी बदलता नहीं, लेकिन इंसान ने सारे कायदे—कानून तोड़ डाले हैं। उसने प्रकृति से कुछ नहीं सीखा। ईश्वर के विधान को तोड़ने का यत्न आरम्भ कर रखा है। कहने को तो इंसान प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ है, लेकिन बेजान प्रकृति और सोचने की शक्ति में शून्य पशु जिन नियमों पर चलता है, मनुष्य ने उनसे कुछ नहीं सीखा। यदि प्रकृति से सीखना है तो सूर्य से सीखो, चाँद से सीखो और हजारों लाखों भील प्रति धंटे की गति से दौड़ रहे तारों और सितारों से सीखो जो मोटर—गाड़ियों और रेलगाड़ियों की तरह कभी आपस में टकराते नहीं, एक पल रुकते नहीं। अपनी राह से बेराह नहीं होते। यह है कानून और कायदे पर चलना।

स्वामीजी ने पौष्टिक आहार लेते हुए ब्रह्मचर्यमय जीवन जीने का सुझाव दिया और बताया कि ब्रह्मचर्य और तप से ही विद्वान् लोगों ने मौत को जीत लिया था। यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक पैथागोरस ने किसी व्यक्ति के पूछने पर पति—पत्नी के शारीरिक संबंधों के विषय में जो बात कही थी उसका हवाला देते हुए स्वामीजी ने कहा कि अत्यधिक इन्द्रिय सुखों में फंसे हुए लोग अपना क़फ़न तैयार करने में लगे हुए हैं।

अब आगे...

स्वामी सर्वदानन्द जी कहा करते थे कि आजकल के लोग भी ऐसा ही करते हैं। गृहस्थाश्रम को इसलिए शुरू किया गया कि दुनिया चलती रहे, स्त्री—पुरुष सन्तान पैदा करने के लिए मिलें। सन्तान हो गई तो उसके बाद अपने—आपको नष्ट कर्यों करते हो भाई! इस अनमोल रत्न को सँभाल के रखो, इससे तुम्हारे चित्त में खुशी आएगी, शरीर में शक्ति बनी रहेगी।

शरीर को ठीक रखने के लिए आवश्यक है कि समय पर खाओ, समय पर सो आओ, समय पर जागो, उचित काम करो, उचित व्यायाम भी। ऐसा करने से स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, दिल के अन्दर खुशी भी, मस्तिष्क में प्रकाश भी। ऐसा न करके यदि कभी प्रातः 8 बजे खाना खाने बैठ जाओ कभी दोपहर के एक बजे कभी शाम के सात बजे और कभी रात के बारह बजे, तो पहले पेट खराब होगा, फिर स्वास्थ्य का सत्यानाश हो जाएगा। चरक ऋषि ने स्वस्थ पुरुष के लिए एक शब्द निर्माण किया है

'कालभोजी' अर्थात् समय पर खाओ; दूसरे, परहेज से खाओ। ऐसा करनेवाला आदमी या तो बीमार नहीं होता, हो जाय तो बहुत जल्दी ठीक हो जाता है। चरक ने ही स्वास्थ्य के नियमों का वर्णन करते हुए कहा है—

"पथ्याशी व्यायामी स्त्रीषु जितात्मा नरो न रोगी स्यात्।"

'जो परहेज से खाता है, ऐसी वस्तुओं को नहीं खाता जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, जो प्रतिदिन उचित व्यायाम करता है, जो स्त्री हो तो पुरुषों के विषय में, पुरुष हो तो स्त्रियों के सम्बन्ध में अपने—आप को वश में रखता है, ऐसा आदमी रोगी नहीं होता।

आदमी परहेज कोई करे नहीं, रोग में भी अगड़म—बगड़म चीजें खाता रहे तो इसके

सिवाय और क्या होगा कि बीमारी बढ़ती जाए, धीरे—धीरे ला—अलाज हो जाए।

मेरे एक मित्र थे, बीमार बहुत रहते थे। कभी एक कष्ट, कभी दूसरा। एक बार बहुत बीमार हो गए। कई डॉक्टरों से इलाज कराया। ठीक नहीं हुए तो एक हकीम के पास पहुँचे; बोले—“हकीम जी! मैं बीमार बहुत रहता हूँ, कोई अच्छी—सी दवा दीजिए।” हकीम ने उसकी नब्ज़ देखी और कहने लगे—“खराबी तो बहुत है। दिल और दिमाग की नसें कमज़ोर हो गई हैं फेफड़े निर्बल हैं, अन्तःदियों में खराबी आ गई है, जिगर और मेदा भी कमज़ोर हैं, फिर भी इलाज हो सकता है। दवाई मैं देता हूँ। परहेज आपको करना होगा।”

यह साहब बोले—“सुनिए हकीम जी! परहेज मुझसे होगा नहीं, आप दवाई दें या न दें। मैं जो कुछ खाता—पीता हूँ उसे तो छोड़ूँगा नहीं।

हकीम जी ने पूछा—“क्या खाते—पीते हैं आप?

वह बोले—“एक तो खाना खाता हूँ।”

हकीम जी ने कहा—“वह तो खाना ही चाहिए।”

वह बोले—“परन्तु मैं खाना खाता हूँ गोश्ट (मांस) के साथ, जिसमें खूब तेज़ मिर्च हैं, तेज़ मसाला।”

हकीम जी ने कहा—“यह तो बुरी बात है। और क्या खाते हैं आप?

वह बोले—“खाना खाने से पहले शराब भी जरूरी है, नहीं तो भूख नहीं लगती।”

हकीम जी ने कहा—“और क्या करते हैं आप?”

वह बोले—“सांयं समय अफ़्रीस भी खाता हूँ, इसकी आदत हो गई है मुझे।” हकीम जी ने पूछा—“और?” वह बोले—“और कुछ नहीं साहब दिन में दस—बारह घण्टाएँ कॉफी

पीता हूँ रात को सोते समय कोकीन खाता हूँ, इसके बिना मुझे नींद नहीं आती और फिर प्रतिदिन लगभग एक सौ सिगरेट भी पीता हूँ।”

हकीम जी ने सोचते हुए कहा—“यह तो बहुत अच्छा करते हैं आप। ऐसा करने के कई लाभ हैं।”

वह बोले—“लाभ? परन्तु डॉक्टर तो कहते हैं इन्हें छोड़ दो। आप बहुत अच्छे हैं हकीम जी, मैं आपसे ही इलाज कराऊँगा, परन्तु लाभ क्या हैं वह तो बता दीजिए।” हकीम जी ने कहा—“पहला लाभ यह है कि जो आदमी ऐसे काम करे जैसे आप कर रहे हैं, उसे बहुत आराम मिलता है; दूसरा यह कि वह कभी बूढ़ा नहीं होता; तीसरा यह कि उसके बीची—बच्चे, भाई, सम्बन्धी कोई भी उसकी इच्छा के विपरीत नहीं चलता; और चौथा यह कि उसे डॉक्टर—वैद्य—हकीम की ज़रूरत नहीं पड़ती।”

वह आश्चर्य से बोले—“इतने लाभ होते हैं?”

हकीम जी ने कहा—“हाँ, मेरे भाई! जो आदमी वह सब—कुछ कर जो आप कर रहे हैं, वह आज हो या कल, ऐसा बीमार पड़ता है कि चारपाई से उठ नहीं सकता। अब चारपाई पर लेटे रहना आराम नहीं तो क्या है? फिर ऐसा आदमी जवानी में ही मर जाता है, उसे बुद्धिमता कैसे? और जो मर ही गया उसकी पत्नी, बच्चे, भाई, सम्बन्धी उसकी इच्छा के प्रतिकूल कैसे चलेंगे? और जो इस दुनिया में ही नहीं उसे हकीम, डॉक्टर या वैद्य की ज़रूरत ही क्या?

इसके बाद भी यह साहब समझे या नहीं सो मुझे मालूम नहीं, परन्तु यह बात बिल्कुल सच है कि जो आदमी परहेज नहीं करता और जो परहेज करने की बजाय बदपरहेजी करता है वह अपने शरीर को भी नष्ट कर लेता है, दिल को भी और दिमाग को भी।

यह थी ‘पथ्य आशी—परहेज से खाना, पहेज से रहने की बात। प्रतिदिन उसे कोई—न—कोई शारीरिक व्यायाम करना चाहिए। खाना खाया है, तो उसे हज़म करने का कोई तरीका भी तो होना चाहिए।

हज़म करने का तरीका है शारीरिक व्यायाम। दौड़ो, सैर करो, दंड—बैठक निकालो, कुछ—न—कुछ तो करो। जो लोग दुकानदार हैं उनके लिए तो व्यायाम करना और भी जरूरी है क्योंकि वे सारा दिन बैठे ही रहते हैं। परन्तु उनसे व्यायाम करने की बात कहो तो उत्तर देते हैं—‘क्या करें जी। समय ही नहीं मिलता।’ अरे, बीमार पड़ने का समय मिलता है या नहीं? यदि बीमार पड़ने का समय निकाल सकते हो तो व्यायाम करने का समय भी निकाल लो, फिर बीमार पड़ने का समय बच जाएगा। बहुत समय नहीं मिलता तो पन्द्रह—बीस मिनट ही समय निकालो, उस समय में योग के आसन कर लो। मुझे देखो, इतनी आयु का हुआ, फिर भी प्रातः पन्द्रह मिनट योग के आसन अवश्य

करता हूँ और एक मेरा अपना आसन है वह भी प्रतिदिन करता हूँ, यह आसन है ‘हँसना’—खूब जोर से, खुलकर हँसना।

मैं श्रीनगर में था, कुछ कशमीरी पंडित मेरे पास आए; बोले—“स्वामी जी! आप बड़े—बड़े लोगों के यहाँ तो ठहरते हैं हमारे यहाँ रआनावाड़ी में नहीं ठहर सकते?

मैंने कहा—“क्यों नहीं ठहर सकता! चलो, आज तुम्हारे यहाँ रह्णा।”

मैं वहाँ गया। रात को सोया। प्रातः तीन बजे उठा। ध्यान में बैठा। ध्यान के बाद कुछ देर योग के आसन किए। तब खूब ऊँची आवाज में जोर से हँसने लगा। वे लोग मकान के ऊपर वाले भाग में रहते थे। मेरा हँसना सुनकर वे नीचे आए। मुझे अकेला देखकर बोले—“स्वामी जी! सुबह—सुबह यहाँ कौन आया था।”

मैंने कहा—“कोई भी तो नहीं।”

वे बोले—“आप हँस रहे थे न?”

मैंने कहा—“हाँ, हँस तो रहा था।”

वह बोले—“किसके साथ?”

मैंने कहा—“अपने साथ।”

(और कथा सुननेवाले सभी हँस पड़े।)

अरे भाई! यह हँसना बहुत ज़रूरी है। खुलकर हँसना, खूब जोर से हँसना ऐसा व्यायाम है जिससे शरीर की सभी नाड़ियाँ खुल जाती हैं। आजकल कई लोग कहते हैं, ‘बहुत जोर से हँसना तो अस्भ्यता की निशानी है, विशेषकर सोसाईटी में ऐसा करना।’

देखो भाई! मैं तुम्हारी इस सभ्यता को जानता नहीं परन्तु यदि वास्तव में तुम्हारी सभ्यता यही कहती है तो मेरी बात मानो, प्रातः—समय अपने बाथरूम (स्नानागार) में जाकर खिड़कियाँ—द्वार बन्द कर लो, सामने रख लो शीशा, और खूब जोर से हँसो, कहकहे लगाओ। यह हँसना लाख दवाओं की एक दवा है। मनुष्य में 82 करोड़ 82 लाख दस हज़ार दो सौ एक नाड़ियाँ हैं। प्रतिदिन इनकी सफाई होनी चाहिए। शरीर के अन्दर कोई कार्पोरेशन या म्युनिसिपल कमेटी तो है नहीं, कोई महकमा—सफाई भी नहीं। हँसने से ही ये सब—की—सब नाड़ियाँ खुल जाती हैं, फिर हँसते क्यों नहीं? इसमें तुम्हारा लगता क्या है?

कई लोग होते हैं जो बाहर तो हँसते—मुस्कराते हैं, घर पहुँचते ही मुँह सुजा लेते हैं।

ऐसे एक आदमी से मैंने पूछा—“यह क्या करते हो भाई? घर आते हो चुप क्यों हो? मुँह क्यों सुजा लेते हो?”

वह बोले—“आप नहीं जानते स्वामी जी! ऐसा न करूँ तो पत्नी पर रोब कैसे रहेगा? बच्चों पर रोब कैसे रहेगा?”

मैंने हँसते हुए कहा—“कमाल हो तुम! घर को तुमने सैण्ट्रल जेल बना रखा है, अपने आपको दरेगा, घरवालों को कैदी। भले आदमी, घर में यार से रहे तो पत्नी व बच्चे भी खुश रहेंगे, तुम भी खुश रहेगे।”

एक देवी जी को देखा, वह भी ऐसी ही थी। जितनी देर पति कार्यालय में रहते,

उतनी देर सबसे हँस—हँकर बातें करती। जैसे ही पति के आने का समय होता, वैसे ही मुँह सुजाकर बैठ जाती। मैंने पूछा—“यह क्या करती हो बेटी! पति के आते ही मुँह क्यों सुजा लेती हो?”

वह बोली—“ऐसा न करूँ तो पति महाराज जी साझी कैसे लाकर देंगे?”

(और सब लोग जोर से हँस उठे। स्वामी जी कितनी देर तक हँसते रहे। तब बोले—)

यह तो हाल है उन लोगों का! ऐसे काम चलेगा नहीं। शरीर बीमार हो गया तो फिर जीवनभर रोते बीतेगा। जीवन भर रोने की बजाय प्रतिदिन थोड़ी देर हँस लिया करो भाई! इसमें तुम्हारा जाता क्या है? सैर करो, व्यायाम करो, योग के आसन करो, कुछ—न—कुछ तो करो! ऐसा नहीं करोगे तो रोग तुम्हारे द्वार पर खड़े रहेंगे। किस समय कौन अन्दर आ घुसे, यह कौन जानता है?

यहाँ की बात तो नहीं, बम्बई की है, वहाँ बड़े—बड़े सेठ रहते हैं। खूब खाते भी हैं, मलाई भी जलेबी भी, इमरती भी लड्डू, पेड़, पूरी, कचौरी भी फल भी खाते हैं पराँठे भी, हलवा भी और कई प्रकार की चीज़ें। और तब बैठ जाते हैं दुकान या दफ्तर में। नीचे रुई का गद्दा, उसपर सफेद चादर। सेठ जी गद्दे पर बैठते हैं तो पीठ के पीछे एक बड़ा—सा गाव तकिया रख लेते हैं।

और तब मालूम है आपको, क्या होता है? मनुष्य का यह शरीर है न इसके अन्दर एक मशीन लगी है, वह अपना काम शुरू कर देती है। पीठ के पीछे रखा हुआ वह तकिया धीरे—धीरे आगे बढ़ने लगता है और एक दिन आता है जब पीछे का पूरा गाव तकिया आगे आ जाता है और सेठ जी हर समय इस तकिये को साथ लिए फिरते हैं।

(स्वामी जी ने अपने पेट से आगे हाथ बढ़ाकर सेठ जी के बढ़े पेट की हालत बताई तो लोग हँस—हँसकर लोट—पोट होने लगे। स्वामी जी ने हँसते हुए कहा—)

इस प्रकार आप भी पेट बढ़ाना चाहते हो तो बड़ाओ मेरे भाई! परन्तु याद रखो, पेट का बढ़ाना सौ बीमारियों का घर है। अंग्रेजी में एक कहावत है—

“Longer the waist-line

Shorter the life-line”

अर्थात् कमर का दायरा ज्यो—ज्यो बड़ा होता है आयु का दायरा त्यो—त्यो छोटा होता जाता है। परन्तु खाने—पीने की बात छोड़ो। चरक ने शरीर को ठीक रखने के लिए तीसरी बात यह कही कि आदमी ‘स्त्रीषु जितात्मा हो।

अर्थात् यदि वह पुरुष है तो स्त्रियों के सम्बन्ध में, स्त्री है तो पुरुषों के सम्बन्ध में अपने ‘आपको काबू में रखे। पराई स्त्री या पराए पुरुष की ओर बुरी भावना से देखना भी पाप समझे। इस पाप से अपने—आपको बचाए रखे। ऐसा जो आदमी है वह रोगी नहीं होता।

यह है ‘राजानम्’ का अर्थ! अपने कुछ नियम बनाओ, कुछ कानून—कायदे, विधान बनाओ।

अपने लिए कुछ कानून—कायदे, विधान बनाओ, उसके अनुसार चलो।

युक्तस्त्रियों योग के आसन अवश्य

युक्तस्त्रियों योग के आसन अवश्य

(पीता 6/17)

यह भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा, ‘मुनासिब खाओ, मुनासिब व्यवहार को अपनाओ, मुनासिब समय पर जाओ, मुनासिब कर्म करो। जो ऐसा करता है उसके दुःख दूर हो जाते हैं।

समय निश्चित करो अपने लिए कि कब सोना, कब जागना, क्या खाना, किस समय खाना, क्या करना, किस समय करना है। उस समय से इधर—उधर मत जाओ। यह है मुनासिब खाने और मुनासिब व्यवहार का अर्थ।

परन्तु आजकल तो ‘मुनासिब’ का अर्थ ही कुछ और हो गया है। यह हो गया कि जहाँ वहाँ मिले खाओ, अपने—आप को खुश करने के लिए भी खाओ, दूसरों को खुश करने के लिए भी खाओ। यहाँ की बात नहीं जानता, परन्तु बम्बई में आप जहाँ भी जाइए वहाँ सबसे पहले चाय मिलेगी। दिन में यदि पन्द्रह जगह गए, तो कम—से—कम पन्द्रह चाये चाय तो पीनी होगी। मैंने पूछा, “अरे भाई! इतनी चाय क्यों पीते हो? एक दिन में पन्द्रह—पन्द्रह चायाए?”

वह बोले—“पन्द्रह नहीं स्वामीजी, तीस चालीस चाये चाय तो पीने पड़ते हैं।”

मैंने कहा—“फिर क्यों पीते हो?”

वह बोले—“क्या करें स्वामी जी! किसी के पास गए, उसने चाय दी, हम पीएँ नहीं तो वह नाराज़ नहीं होगा?”

मैंने कहा—“अरे भाई! इसके नाराज़ होने की चिन्ता है तुम्हें, इस शरीर के नाराज़ होने की नहीं, जिसे सारी आयु तुम्हारे साथ रहना है। यह नाराज़ हो जाय तो फिर कोई राजी नहीं रहता।”

## वेदों में आदर्श जीवन की परिकल्पना

### ● आचार्या सूर्या देवी चतुर्वदा

**वे**

द मनुष्य जाति के आदि ज्ञान ग्रन्थ हैं। मनुष्य का जीवन सर्वोत्तम जीवन है। मनन, चिन्तन, विवेक आदि का समन्वय मनुष्य जीवन में ही होता है। वेदों में मनुष्य जीवन को देवों की अयोध्या कहा है। मन्त्र है—

देवपुरी

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूर्योध्या।  
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्णो ज्योतिषावृतः॥

—अथर्व. 10/2/31

अर्थात् मनुष्य जीवन का यह शरीर, अष्टाचक्रा= आठ चक्रों वाली, नवद्वारा= नौ द्वारों वाली, देवानां पूः= इन्द्रिय रूपी देवों की नगरी है। यह नगरी, अयोध्या= न जीतने योग्य है। तस्याम्= उस अयोध्या नगरी में, हिरण्ययः= चमकीला, स्वर्ण सदृश, कोशः= कोश है, वह, स्वर्गः= स्वर्ग नामधेय है, ज्योतिषावृतः= ब्रह्म ज्योति से आच्छादित है।

मन्त्र का भाव है मनुष्य का जीवन देवपुरी है। जिसमें 1. मूलाधार, 2. स्वाधिष्ठान, 3. मणिपूर, 4. अनाहत, 5. विशुद्ध, 6. सहस्रार एवं ब्रह्मरन्ध ये चक्र हैं। इस देवपुरी में आँखों के छिद्र, नासिका रन्ध, कर्ण विवर, मुख गर्त, पायु एवं उपस्थ के छिद्र ये द्वार हैं। परमेश्वर द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलने से काम, क्रोध आदि से अपराजित होने के कारण यह देवपुरी अयोध्या कही जाती है। मस्तिष्क रूपी हृदय हिरण्यय कोश है, वह स्वर्ग रूप है। ब्रह्म की ज्योति से मस्तिष्क रूपी हृदय ढका हुआ है।

ऋषिपुर

मनुष्य जीवन ऋषिपुर है। वेद कहता है— सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।

—यजु. 34/55

अर्थात् शरीरे= मनुष्य शरीर में, सप्त ऋषयः= सात ऋषि, प्रतिहिताः= बैठे हैं, ये, सप्त= सातों, अप्रमादम्= प्रमाद रहित होकर, सदम्= शरीर सदन की, रक्षन्ति= रक्षा करते हैं।

तात्पर्य हुआ शरीर में ऋषि विद्यमान है, वे आलस्य रहित होकर शरीर को चलाते हैं। इनके रहने पर ही मनुष्य शरीर जीवित कहा जाता है। शरीर में रहने वाले गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप एवं अत्रि ये ऋषि हैं। वेदवाणि सुनने सुनाने से एक कान गोतम ऋषि है, ज्ञान को भली प्रकार धारण करने से दूसरा कान भरद्वाज ऋषि है। प्रेम, स्नेह चक्षु व्यक्त करते हैं, अतः एक चक्षु विश्वामित्र ऋषि है, प्रकाश नेत्रों में रहता है, अतः दूसरी आँख जमदग्नि ऋषि है। बसाने वाले प्राणों के संचार का मार्ग नासिका है, अतः एक नासिका रन्ध वसिष्ठ ऋषि है, प्राणों

का वशीकरण करके आत्मदर्शन होता है, अतः दूसरा नासिका रन्ध कश्यप ऋषि है। भोजन मुख से खाया जाता है, अतः मुख अत्रि ऋषि है।

यह सात ऋषियों वाला मनुष्य का जीवन ऋषिपुर है, यह सर्वोत्तम जीवन है। इसे स्वच्छ, पवित्र रखना अति आवश्यक है। सुख साधनों की उपलब्धि इस ऋषिपुर को दूषित, विकृत न कर दे, इसकी सतर्कता अनिवार्य है। सतर्कता द्वारा दोषों, कल्पणों से रहित शुद्ध, पवित्र जीवन ही आदर्श जीवन कहा जाता है।

आदर्श जीवन

संस्कृत में आदर्श दर्पण को कहते हैं। आदर्श शब्द का व्युत्पत्ति जन्य अर्थ है—

आ दृश्यते अस्मिन् अनेन वा इति आदर्शः। अर्थात् जिसमें चारों ओर से भली प्रकार ठीक-ठीक देखा जाता है, वह आदर्श कहता है।

आदर्श= शीशे में जो जैसा है, वैसा ही दीखता है, उससे न भिन्न दीखता है, न अधिक दीखता है। ठीक वैसे ही शीशे की भाँति मनुष्य जीवन भी साफ सुथरा हो। कर्तव्य अकर्तव्य, सत्य असत्य आदि का जिसमें बोध हो, वह जीवन ही आदर्श जीवन है। जो दूषित विचारों, दूषित स्वभावों, दूषित कर्मों से रहित हो, ऐसा जीवन ही आदर्श जीवन होता है। जो अनुकरणीय जीवन हो, वह आदर्श जीवन कहलाता है।

वेदों में आदर्श जीवन की परिकल्पना के अनेक अग्रगण्य संदेश हैं। जीवन आदर्शमय हो, साफ सुथरा हो, अतः प्रार्थना स्वरूप वेद का संदेश है—

विश्वानि देव सवितरुरितानि परा सुव।

यद भद्रं तन आ सुव॥

—यजु. 30/4

अर्थात् हे देव= उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव युक्त, सवितः= उत्तम गुण, कर्म, स्वभावों की प्रेरणा देने वाले परमेश्वर आप हमारे, विश्वानि दुरितानि= सब दुष्ट आचरण व दुःखों को, परा सुव= दूर करें और, यत्= जो, भद्रम्= कल्याणकारी धर्मयुक्त आचरण व सुख है, तत्= उसको, न= हमारे लिए, आ सुव= भली प्रकार उत्पन्न करें।

मन्त्र का तात्पर्य है आदर्श जीवन के लिए प्रत्येक व्यक्ति दुर्गुण, दुर्वर्षसन, दुःखों को दूर करने का प्रयत्न करें। परमात्मा एवं राजा अपने भक्तों को, प्रजाओं को श्रेष्ठ आचरण में प्रवृत्त करे। उन्हें कल्याण प्राप्त होवे, ऐसा सामर्थ्य प्रदान करें।

आदर्श जीवन की विधि यज्ञ

आदर्श, उत्तम जीवन बनाने की अनेक विधियाँ वेदों में उपलिष्ठ हैं। आदर्श जीवन

की विधि का प्रतिपादक मन्त्र है—

तं नो द्यावापृथिवी तत्र आप इन्द्रः शृण्वन्तु  
मरुतो हवं वचः।

मा शूने भूम सूर्यस्य संदृशि भद्रं जीवन्तो  
जरणामशीमहि॥

ऋ. 10/37/16

अर्थात् द्यावापृथिवी= द्युलोक और पृथिवी, आप= जल, इन्द्रः= विद्युत् मरुतः= वायु, दिव्य पदार्थ, न= हमारे, तं हवम्= उस यज्ञ में होने वाले स्वाहाकार, वषट्कार को, च= और, तद्वचः= उस ईश्वर की स्तुति, उपासना, प्रार्थना रूप मन्त्र वाक् को, शृण्वन्तु= सुनें। वयम्= हम, सूर्यस्य संदृशि शूने= सूर्य के संदर्शक उत्तम प्रकाश के अभाव में, मा भूम= न रहें, भद्रं जीवन्तो= सकुशल, आदर्श जीवन जीते हुए जरणाम् अशीमहि= बृद्धावस्था को प्राप्त करें।

मन्त्र में आलंकारिक वर्णन है। मन्त्र का भाव है द्यौ, पृथिवी, जल, विद्युत्, वायु आदि पदार्थ जड़ देव यज्ञ के माध्यम से हमारी प्रार्थना सुनते हैं यानी ये पृथिवी आदि हमारे जीवन को उत्तम बनाते हैं। उस आदर्श जीवन का कर्म, हवम्= यज्ञ ही है, वह यज्ञ हमारे जीवन का अंग बने। यज्ञ करते हुए जीवन में कभी भी प्रकाश का अभाव या शून्यता न रहे। सूर्य निन्तर अपना प्रकाश देकर मरण पर्यन्त जीवन सुखमय करे।

मन्त्र का 'भद्रं जीवन्तो:' निर्देश आदर्श, कल्याणकारी जीवन का ज्ञापक है।

आदर्श जीवन का लक्ष्य

आदर्श, उत्तम जीवन कैसे होता है? आदर्श के लिए कौन से कर्म व वस्तु आवश्यक हैं? इसे निर्दिष्ट करते हुए वेद में कहा है—

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन।

त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्षु तन्चो  
यद्विलिष्टम्॥

—यजु. 2/24, यजु. 8/14

अर्थात् सम्= उत्तम, वर्चसा पयसा= वेदाध्यन का प्रकाश ब्रह्मवर्चस एवं दुर्गादि पदार्थ से, अगन्महि= युक्त हों, सं तनूभि= उत्तम स्वरूप शरीर से युक्त हों, सं शिवेन मनसा= उत्तम कल्याणकारी, शान्त, पवित्र मन से युक्त हों, सुदत्रः त्वष्टा= उत्तम सुख देने वाला, दुःखों का नाशक परमात्मा, रायः विदधातु= ऐश्वर्य प्रदान करे, तन्चः= शरीर का अंग, यत्= जो, विलिष्टम्= निर्बल है, रोगी है अथवा विशिष्ट क्षमता वाला है, उसे, अनुमार्षु= शुद्ध, ठीक करे।

मन्त्र का भाव है आदर्श जीवन का लक्ष्य अभ्युदय, निःश्रेयस की प्राप्ति है। अभ्युदय की प्राप्ति सुन्दर स्वास्थ्य, शुद्ध तन, मन, धन धान्य की समृद्धि से होती है।

अभ्युदयकारी पदार्थों की समृद्धि, ब्रह्मवर्चस एवं दुर्गादि पदार्थों से होती है। श्रुति ज्ञान का नाम ब्रह्मवर्चस है। वह ब्रह्मवर्चस संयम, मर्यादा प्रदान करता है। संयम व मर्यादा से जीवन आदर्श होता है। उस आदर्श जीवन की प्रगति ईश्वर की कृपा से होती है। ईश्वर का ध्यान, भक्ति करने वाले जन आदर्श जीवन प्राप्त करते हैं।

आदर्श जीवन के उपाय

आदर्श जीवन के निमित्त वेदों में बहुत से उपदेश एवं संदेश हैं। यथा— भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये।

—यजु. 15/39

अर्थात् वृत्रतूर्ये= संसार संग्राम में मनुष्य मनः भद्रम्= विचार शक्ति वाले चित्त को कल्याणकारी, कृणुष्व= बनावे

वेदमन्त्र का भाव है कि आदर्श जीवन के लिए मन को कल्याणकारी बनाना उपादेय है। कल्याणकारी, परोपकारी, पाप रहित मन से आदर्श जीवन बनता है।

इदमहमनृतात् सत्यमुपेमि॥

—यजु. 1/5

अर्थात् यह मैं असत्य से सत्य मार्ग को प्राप्त करता हूँ।

तात्पर्य हुआ आदर्श जीवन के लिए सत्य का व्यवहार आवश्यक है। सत्य कहने, सुनने का व्यक्ति का सर्वदा संकल्प होवे। परोपकारमय जीवन आदर्श जीवन का उत्तम लक्षण है। परोपकार करना, किसी की भलाई करना जीवन के आदर्श हैं।

पुरुषार्थ आदर्श जीवन की पहचान है।

मन्त्र है—

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सत्य आहितः।

—अथर्व. 7/50/8

अर्थात् मेरे दाँए हाथ में, कृतम्= कर्म, पुरुषार्थ है और मेरे बाँए हाथ में, जयः= विजय निहित है।

मन्त्र का भाव है पुरुषार्थ आदर्श जीवन का उत्तम कार्य है। किसी का छीन झपट कर खाना, लेना आदर्श जीवन का लक्षण नहीं है।

आदर्श जीवन के लिए मित्रवत् व्यवहार अनिवार्य है। मन्त

शं

का—आपने कहा कि मोक्ष से लौटने पर पहला जन्म शूद्र का होता है, परंतु मोक्ष फल तो अति उत्तम कर्मों से मिलता है। और ऐसी आत्माएँ यदि फिर जन्म लें तो उच्च कोटि के मनुष्य के रूप में ही होनी चाहिए?

**समाधान** — मान लीजिए, एक गरीब आदमी दिल्ली में झुग्गी-झोंपड़ी में रहता है। उसने अच्छा पुरुषार्थ किया। कुछ रुपया कमा लिया। जिसका फल मिला—एक सप्ताह तक मुम्बई की सैर। वह एक सप्ताह तक मुंबई घूमा। खूब, खाया—पीया, अच्छी तरह होटल में भी रहा। एक सप्ताह पूरा हो गया, तो वापस दिल्ली आ गया।

यहाँ सवाल ये उठता है कि अब दिल्ली लौट आया, तो क्या दिल्ली के फाइव स्टार होटल में जाएगा, या वापस अपनी झुग्गी-झोंपड़ी में जाएगा? वापस तो वहीं जाना पड़ेगा न। जिस कर्म से उसको एक सप्ताह की मौज—मस्ती मुम्बई में मिली थी, अब उसके आधार पर उसको दिल्ली के फाइव स्टार होटल में जगह नहीं मिलेगी। अब तो वापस नहीं रहना है, जहाँ से चले थे। इसी प्रकार से, जो व्यक्ति मोक्ष में जाता है, अब जब मोक्ष से वापस लौटेगा, तो फिर वापस सामान्य जन्म में जाएगा। क्योंकि यहाँ से जब चला था, तब भी झुग्गी-झोंपड़ी से ही चला था, जीरो से ही चला था।

## उत्कृष्ट शङ्का समाधान

### ● स्वामी विवेकानन्द परिवारजक

कोई भी यात्रा जीरो किलोमीटर से स्टार्ट होती है। जीरो पर खड़ा हुआ व्यक्ति प्लस (वैश्य परिवार, क्षत्रिय परिवार, ब्राह्मण परिवार) की ओर भी चल सकता है और माइनस (पशु—पक्षी योनि में जन्म) की ओर भी चल सकता है।

मोक्ष से जो लौटेगा—जन्म लेगा, वो सकाम कर्मों का फल है। और मोक्ष में जो आनंद भोगा, वो निष्काम कर्मों का फल था। वो तो भोग लिया, खत्म हो गया।

अब दोबारा आपको मोक्ष में जाना है, तो दोबारा नए सिरे से निष्काम कर्म करो, फिर वेद पढ़ो, अपना ज्ञान करो, समाधि लगाओ, सेवा करो, परोपकार करो और फिर दोबारा मोक्ष में जाओ। पर वापस लौटने के समय पहला जन्म तो वो ही झुग्गी-झोंपड़ी में जाना पड़ेगा अर्थात् शूद्र परिवार में।

**शंका**—एक विदेशी महिला भारत में रहते हुए अपने जीवन—काल में दूसरों की सेवा करती रही। उन्होंने शायद ईश्वर उपासना नहीं की। यम, नियम का पालन नहीं किया। तो क्या वे मोक्ष की अधिकारी थीं?

**समासधान** — उत्तर है, नहीं। दरअसल, मोक्ष के लिए तीन काम अनिवार्य

(कम्पलसरी) हैं:—

1. पहला काम वेद के अनुसार हमारा ज्ञान—विज्ञान हो। जो हमारे सिद्धांत व मान्यताएँ हैं, वे वेदानुकूल हों अर्थात् हमारा ज्ञान शुद्ध होना चाहिए।

2. मोक्ष प्राप्ति के लिए दूसरा काम—निष्काम कर्म होने चाहिए। उन्होंने इतना तो अच्छा किया कि गरीबों, रोगियों की सेवा की। परन्तु मनुष्य जाति की सेवा के पीछे उनकी भावना दूसरी थी। शुद्ध भावना नहीं थी। सेवा के पीछे अपने धर्म—संप्रदाय का प्रचार करने, की भावना थी। इसलिए सांप्रदायिक उद्देश्य होने के कारण वे शुद्ध (निष्काम) कर्म नहीं थे।

3. तीसरा काम है—शुद्ध उपासना अर्थात् जैसा ईश्वर का स्वरूप वेदों में बताया है ईश्वर की उपासना करना। अगर वह भी उनका नहीं होगा तो उन्हें मोक्ष नहीं मिलेगा।

**शंका**—मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती। ऐसा क्यों कहा जाता है?

**समाधान** — यहीं तो बात है, जो लोगों के दिमाग में नहीं बैठती। शरीर मरता है और आत्मा नया जन्म ले लेती है। जैसे स्कूटर को गैराज में रखकर हम उससे अलग हो जाते हैं। वैसे मृत्यु होने पर शरीर और आत्मा दोनों अलग—अलग



हो जाते हैं। अंतर इतना है कि स्कूटर पर तो हम रोज बैठते हैं, फिर अलग हो जाते हैं उससे तो जल्दी अलग हो जाते हैं, पर शरीर से पचास, साठ अस्सी या सौ साल के बाद अलग होते हैं।

तात्पर्य है कि एक न एक दिन आत्मा शरीर से अलग हो जाती है। उसी क्षण का नाम 'मृत्यु' है। उसके बाद, अगला 'जन्म' होता है। ठीक वैसे ही, जैसे आप पुराने स्कूटर को छोड़कर नया स्कूटर खरीदते हैं। गीता में इसी बात को पुराने कपड़े त्यागकर नए वस्त्र धारण करने के उदाहरण से समझाया गया है। स्कूटर घिस—पिट गया, नया ले लिया। ऐसे ही शरीर जर्जर हो गया, तो छोड़ दिया। फिर नया शरीर मिल जाएगा। मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती, ऐसा इसलिए कहा जाता है।

दर्शन योग महाविद्यालय  
रोजड़ बन, गुजरात

## स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द में अन्तर

आर्य समाज के अनेक सदस्यों को यह नहीं पता कि स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द में क्या अन्तर है? उनकी जानकारी के लिए दोनों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है—

### स्वामी दयानन्द

**जन्म**—गुजरात के जिला राजकोट के ग्राम टंकारा में सन् 1824 ई. में हुआ। बचपन का नाम मूलशंकर था। पिता कर्षण जी बड़े जर्मीदार और शिव के पक्के भक्त व उपासक थे।

**शिक्षा**—स्वामी जी ने विभिन्न पुराण, प्रारम्भिक व्याकरण शब्द रूपावली आदि घर पर ही पढ़ लिए थे। 14 वर्ष की अवस्था तक उन्होंने यजुर्वेद सहित कंठस्थ कर ली थी। गृहत्याग के पश्चात् विभिन्न विद्वानों और योगियों से विद्योपार्जन किया और मथुरा में गुरु विरजानन्द जी से व्याकरण वेदों का ज्ञान प्राप्त किया।

**प्रचार**—वेदों का प्रचार किया। त्रैतवाद को समझाया। मूर्तिपूजा अवतारवाद का खण्डन किया। शुद्ध शाकाहारी भोजन की प्रेरणा दी।

**देहान्त**—30 अक्टूबर, 1883 ई कार्तिक की अमावस्या को दीपावली के दिन अजमेर में प्राण त्यागे।

### स्वामी विवेकानन्द

**जन्म**—12 जनवरी, 1863 में कलकत्ता में हुआ। इनके बचपन का नाम नरेन्द्र था। इनके पिता विश्वनाथ जी वकील थे।

**शिक्षा**—इन्होंने कालेज में बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की।

**गुरु**—इनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस थे, जो काली माई के उपासक थे। उनसे प्रभावित होकर अद्वैतवाद को स्वीकार किया।

**प्रचार**—प्रचार का प्रचार किया और माँस खाने के लिए मना नहीं किया क्योंकि स्वयं माँस खाते थे।

**देहान्त**—4 जुलाई, 1902 ई. को रात को लगभग 9 बजे निधन हुआ।

देवराज आर्य मित्र  
डब्ल्यू. जैड-425 हरिनगर,  
नई दिल्ली-64

## ऋषि—सन्देश

1. जो अपने कार्य में आनन्द का अनुभव करता है उसे विश्राम की आवश्यकता नहीं।

2. अन्तः कारण की शुद्धि के लिये यज्ञ करना चाहिये।

3. अंहकार रूपी चश्मा उतारने पर प्रभु के दर्शन होते हैं।

4. सच्चा योगी वह है जिसने काम, क्रोध के वेग को जीत लिया।

5. जो दूसरों को कुछ दिये बिना उनसे लेने की इच्छा करता है, वह अपराधी है।

6. शरीर जड़ है, आत्मा चेतन है, परमात्मा परमचेतन है।

7. प्रसन्नता व मुस्कराहट से युक्त सेवा ही वास्तविक सेवा है।

8. अतिशय सुख भगवान से विमुख करता है।

9. गोवर्धन ही विश्व का वर्धन है। गो पतन विश्व का पतन है।

10. विश्व को एक सूत्र में बाँधने के लिये यज्ञ, सत्संग और धार्मिक स्थल महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

कृष्ण मोहन गोयल  
113-बाजार कोट,  
अमरोहा-244221

**सा**

री दुनिया में पर्यावरण एक ऐसा ज्वलन्त विषय है। जिसको लेकर बुद्धिजीवी वर्ग अत्यन्त चिन्तित व आन्दोलित है। ऐसा इस कारण से है कि पर्यावरण कोई साधारण समस्या नहीं है अपितु यह मनुष्य जाति व समस्त प्राणी जगत के जीवन मरण का प्रश्न है। यदि पर्यावरण को सुरक्षित व नियंत्रित न किया गया तो मानव जाति सहित समस्त प्राणी जगत का भविष्य अनिश्चित, असुरक्षित, अनधिकारमय व विनाशकारी होकर उसके अस्तित्व को समाप्त भी कर सकता है। पर्यावरण प्राणिजगत् के लिए ऐसा ही है जैसा कि चेतन-तत्त्व जीवात्माओं के लिए उसके अपने शरीर अर्थात् आत्मा के लिए मानव शरीर। ऐसा इसलिए है कि मानव शरीर उसमें निवास करने वाली जीवात्मा का एक प्रकार से पर्यावरण ही है। हम अपने शरीर की रक्षा के सभी उपाय करते हैं। स्नान करके इसे स्वच्छ रखना, शुद्ध वायु में श्वास, शुद्ध जल पान, पौष्टिक व संतुलित भोजन, समय पर सोना व जागना, पुरुषार्थ व तप, ईश्वरोपासना, मन व मस्तिष्क में सत्य व शुद्ध विचार, यज्ञ-अनिहोत्र, माता-पिता की सेवा, परोपकार, समाज सेवा, निर्धनों की सहायता, भूखों को भोजन, अज्ञानियों को शिक्षा आदि सब कुछ करते हैं। इसका प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है और वह स्वस्थ, निरोग, दीर्घजीवी, बलशाली, प्रतिष्ठित, यशस्वी, स्वावलम्बी, सुख व शांति से युक्त रहता है। जिस प्रकार हमारी आत्मा अर्थात् हमें, यह जड़ व मरणधर्म शरीर स्वस्थ व निरोगी चाहिए। यदि शरीर को स्वच्छ व प्रदूषण रहित हरा-भरा प्राकृतिक वातावरण तथा शुद्ध अन्न वनस्पति-ओषधियाँ चाहिए। यदि शरीर को स्वच्छ व प्रदूषण रहित वातावरण व पर्यावरण नहीं मिलेगा तो हमारे शरीर का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा और जीवन में सामान्य कार्यों को करने के स्थान पर हम जीवन की पूरी अवधि इसे रोगों से बचाने या आ गए अनचाहे रोगों के उपचार आदि में लगे रहेंगे। सुख का नाम भी शायद जीवन में याद न रहे, ऐसी स्थिति पर्यावरण के प्रदूषित होने पर भविष्य में आ सकती है॥

आइए, कुछ चर्चा हम पर्यावरण की भी कर लेते हैं। पर्यावरण, पृथिवी-अग्नि-जल-वायु-आकाश की समस्त प्राणिजगत् के जीवन आयु स्वास्थ्य के अनुकल शुद्ध व आदर्श स्थिति को कहते हैं। यदि हमारा वायुमंडल शुद्ध व प्रदूषण से मुक्त है, नदियों, नहरों कुओं, तालाबों, सरोवरों, वर्षा व खेती में सिंचाई का जल भी शुद्ध व हानिकारक प्रभाव से मुक्त है, हमारी पृथिवी की उर्वरा-शक्ति अपनी अधिकतम क्षमता के साथ विद्यमान

## हमारा पर्यावरण व प्राणी जगत्

### ● मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

है, हमारे जंगल घने व सुरक्षित हैं, देश के 3/4 भाग में वन व सभी प्रकार के वन्य-जन्तु हैं, भूमि के शेष भाग में कृषि खेत, नगर-गाँव-सड़कें व उद्योग आदि हैं, खनन द्वारा भूमि का अनावश्यक व अनुचित दोहन नहीं होता है, वातावरण स्वास्थ्य के अनुकूल है, समय पर वर्षा होती हो, वर्षा जल पीने योग्य हो तथा उसमें हानिकारक तत्व घुले हुए न हों, सभी ऋतुएँ समय पर आती-जाती रहती हों, तो यह मान सकते हैं, कि हमारा पर्यावरण ठीक व सामान्य है। आज की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। अतः अब यह देखना आवश्यक है कि यह स्थिति उत्पन्न कैसे हुई?

हमारी सृष्टि आज से 1960853114 वर्ष पूर्व एक सत्य, चेतन व अपौरुषेय सत्ता द्वारा रची गई है। तभी से इस पर मानव व प्राणी जगत भी हैं, वनस्पतियाँ, जल, अग्नि वायु आदि सब कुछ हैं। आरंभ में वायु मंडल एवं पूरा पर्यावरण आदर्श रूप में था अर्थात् उसमें किंचित भी असन्तुलन या प्रदूषण नहीं था। जनसंख्या कम थी। धीरे-धीरे जनसंख्या में वृद्धि होने लगी। इस कारण, संभवतः एकान्तप्रियता या भीड़भाड़ से दूर रहने के स्वभाव के कारण, लोग दूर-दूर जा कर बसने लगे और आरंभ की कुछ शाताविद्याँ व्यतीत होने के साथ पृथिवी के चारों ओर मानव पहुँच गए व अपने निवास स्थान पृथिवी के सभी भागों में बना लिए। मनुष्य जहाँ रहता है। वहाँ उसके शौच, रसोई या भोजन, वस्त्रों को धोने व अन्य कार्यों से जल और वायु में प्रदूषण उत्पन्न होता है। हमारे प्राचीन ऋषि मुनि प्रदूषण व पर्यावरण के बारे में बहुत सतर्क, सजग व सावधान थे। उन्होंने मानव जीवन पद्धति को कम से कम आवश्यकताओं वाली बनाया। वह जानते थे कि जितनी सुख की सामग्री प्रयोग में लाई जाएगी, उतना अधिक प्रदूषण होगा और उससे मनुष्य का जीवन, स्वास्थ्य व सुख शांति प्रभावित होंगे। इसे इस रूप से समझा जा सकता है कि हमारी इन्द्रियों की शक्ति सीमित होती है। इसे जितना कम से कम प्रयोग करेंगे व खर्च करेंगे उतना अधिक यह चलेगी या काम करेगी। जो व्यक्ति अधिक सुख-साधनों का प्रयोग करता है उसकी इन्द्रियाँ व शरीर के अन्य उपकरण, हृदय, पाचन-तंत्र यकृत-प्लीहा, लीवर-किडनी आदि प्रभावित होकर विकारों आदि से ग्रसित होकर रुग्ण हो जाते हैं। होना तो यह चाहिए कि हम तप, पुरुषार्थ, श्रम, योगासन, हितकर शाकाहारी भक्ष्य श्रेणी का भोजन, अभक्ष्य पदार्थों का सर्वथा व

पूर्णतया त्याग, स्वाध्याय, ध्यान व चिन्तन पर अधिक ध्यान दें जिससे हमारा शरीर स्वस्थ व सुखी रहे। वायु व जल प्रदूषण को रोकने के लिए हमारे पूर्वजों ऋषियों ने एक ऐसी अनोखी नित्यकर्म विधि बनाई जो सारी दुनिया में अपनी मिसाल स्वयं ही है। इसके लिए उन्होंने वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ गोधृत, वनस्पति, ओषधि, सुगंधित, पुष्टिकारक द्रव्य-सामग्री के अणु-परमाणु से मिलकर प्रदूषण के प्रभाव को समाप्त करते थे। इससे वायुमंडल अपनी आदर्श स्थिति संरचना में रहता है। इस प्रकार यज्ञ से उत्पन्न वायु गैस-सूक्ष्मकणों में वायुमंडल में चहुँदिश फैलावा से दूर-दूर तक का वायुमंडल शुद्ध व पवित्र व रोगकृमि रहित हो जाता था। वर्षा होने पर वह यज्ञ के परमाणु अणु व कण हमारी भूमि पर आते थे जो नाना प्रकार की वनस्पतियों, अन्न, पुष्पों व सभी प्रकार की औषधियों की गुणवत्ता में वृद्धि करते थे। हम यह भी अनुभव करते हैं कि यज्ञ के प्रभाव का वनस्पति व समस्त प्राणी जगत पर अध्ययन व परीक्षण कर उससे होने वाले अच्छे प्रभाव पर अनुसंधान की आवश्यकता है। हम समझते हैं कि यदि ऐसे अनुसंधान को वेद ज्ञानी, योगाभ्यासी व आधुनिक वनस्पति विज्ञान सहित सभी विषयों के वैज्ञानिकों का समूह मिलकर करे, तो उससे मानव व प्राणिजगत के लिए लाभप्रद अनेक नए तथ्यों पर प्रकाश पड़ सकता है। और तब अग्निहोत्र यज्ञ की महत्ता व उपयोगिता और अधिक समझ में आ सकती है। यह तो निश्चित है कि वायु व जल का वनस्पतियों से गहरा संबंध है। यज्ञ से वायु मंडल में जो गुणात्मक परिवर्तन होता है। उसका वनस्पतियों पर भी प्रभाव तो होगा ही। मनुष्य द्वारा यह प्रभाव एक रूप में नासिका से सुगन्ध के ग्रहण द्वारा प्राप्त होता है। यज्ञ व अग्निहोत्र की यह सुगन्ध आरोग्यकारी होने के साथ फूलों की सुगन्ध से अधिक प्रभावकारी होती है। अब क्योंकि यज्ञ में वनस्पतियों, ओषधियों, गोधृत व शक्कर आदि मीठे व पौष्टिक अनेक पदार्थ भी डाले गए हैं, तो उसका प्रभाव भी मानव शरीर व जीवन पर निश्चित रूप से होगा। इस प्रभाव को वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध करने वा जानने के लिए यज्ञ प्रेमियों को प्रयास करने चाहिए। इस संदर्भ में यह कहना भी उचित होगा कि हमने विदेशी पाश्चात्य संस्कार इतने अधिक ले लिए हैं कि वायु व वृक्ष के संशोधक अपने प्राचीन जीवनोपयोगी क्रिया-कलापों, कर्मकांडों व विधि-विधानों को तिलांजलि दे रखी है। उन पर विचार ही न करना

हमारी घातक सोच है। आज हमारा वायु मंडल अत्यधिक अशुद्ध है जिसका कारण उद्योगों से उत्पन्न धुएँ, वाहनों में ईधन के जलने से निकले वाली हानिकारक गैसों तथा वृक्षों की कमी आदि है। इसी प्रकार से उद्योगों में अनुपयोगी पदार्थों व घरेलू अनावश्यक पदार्थों को जल में डाल कर बहा दिया जाता है जिससे वायु व जल दोनों प्रदूषित हो गये हैं। इनका सुधार तो हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करके व विज्ञान की सहायता से कर सकते हैं। अधिक संख्या में वृक्षारोपण करके भी समस्या को कुछ-कुछ कम किया जा सकता है। सरकार के साथ नागरिकों को अपना कर्तव्य पालन करना आवश्यक है।

आज सार विश्व पश्चिम जगत के वैज्ञानिक व औद्योगिक उत्पादों के कुचक्र में फँसकर अपने स्वाभाविक व नैसर्गिक जीवन तथा धर्म-कर्म को भूलकर एवं उसे छोड़कर प्रकृति का अधिक से अधिक दोहन व उससे उपलब्ध साधनों के उपभोग को ही जीवन की सफलता का पर्याय मान रहा है। इससे समाज में नाना प्रकार के रोग व दुख उत्पन्न होकर मनुष्यादि प्राणी अल्पायु में अकाल मृत्यु के मुख में जा रहे हैं। विवेकानंद होने के कारण इसका प्रमुख कारण आवश्यकता से अधिक व अनेक अनुपयोगी प्रकार के भोग-पदार्थ जिसमें भव्य निवास, मोटर-गाड़ी, खर्चोंसे स्कूलों की पाश्चात्य मूल्य प्रधान शिक्षा, पुरुषार्थ रहित आरामदायक जीवन, बड़े बैंक बैलेन्स के साथ-साथ असमय का भोजन व खाना-पीना, अनियमित सोना-जागना, असंतुलित व सीमा से अधिक दूरदर्शन मोबाइल आदि का प्रयोग, जिसका प्रभाव आँखों, कानों, मन-मस्तिष्क व शरीर के यन्त्र-तन्त्र पर प्रतिकूल रूप से पड़ रहा है। इनसे जीवन में होने वाले हानिकारक प्रभाव को पीड़ित व उसके परिवार वाले जान ही नहीं पाते हैं। डॉक्टर आदि इस पर कुछ कम ही बताते हैं। हम समझते हैं कि जीवन को स्वस्थ व प्रसन्न रखने के लिए प्रातः 4 से 5 बजे की बीच उठना व रात्रि 10 बजे तक सो जाना, योगासन व व्यायाम करना, शरीर को स्नान आदि से स्वच्छ रखना, त्वचा पर किसी प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग न करना व केवल हर्बल प्रासाधनों का बहुत अल्प मात्रा में प्रयोग करना, अल्पमात्रा में शुद्ध व शाकाहारी पौष्टिक भोजन जिसमें पौष्टिक अन्न से बनी चपाती, चावल, दाले, हरी तरकारियाँ, दूध, दही, मट्ठा सभी प्रकार के स्वास्थ्यवर्धक फल, बादाम, काजू, पिस्ता आदि हों, समय पर लेना चाहिए। अग्निहोत्र यज्ञ से हमारे घरों का वातावरण भी पूर्ण शुद्ध रहना चाहिए, हमें अपने विचार भी शुद्ध व पवित्र रखने

## नव भारतोदय को किरणाञ्जलि देता सूर्योदय

### ● देवनारायण भारद्वाज

**भा**

रत और सूरज तुल्यार्थक शब्द हैं। भा (प्रकाश) में रत (संलग्न) जो रहता है, वही तो सूरज है और वही भारत है। सूरज आकाश में रहता है, किन्तु उसका प्रकाश सर्वत्र भूलोक में भी रहता है। भारत भूलोक में रहता है, किन्तु इसके यश का प्रकाश आकाश तक व्याप्त रहता है। भारत के इस भूभाग का सनातन नाम आर्यवर्त है। आर्यवर्त भी भारत का समानार्थक है, क्यों कि इसकी परिभाषा में जो तत्त्व निहित है—वह है “आर्यज्योतिरग्रा:” (ऋ. 7, 33, 7) अर्थात् इस भूमि पर उत्पन्न पुरुष या स्त्री आर्य है, क्यों कि जिस ओर वे चलते हैं, उनके आगे—आगे ज्योति चलती है। सृष्टि सृजन के बाद लगभग दो अरब वर्ष तक भारत भू की ज्योति जगमगाती रही, किन्तु महाभारत काल के कुछ सहस्र वर्ष पूर्व इस ज्योति पर धुन्ध छाई तो छाती ही चली गई। बीच—बीच में कतिपय वर्चस्वी विद्वान ब्राह्मण और तेजस्वी राजन्य आए, उन्होंने सूरज पर छाए बादलों को छांट तो दिया, किन्तु उनके हटते ही आततायी शक्तियों के प्रबल षड्यन्त्रों के वशीभूत होकर यह भारत भूमि (भारत माता) परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ती चली गई। फिर से भारत माता के वीर सपूत्रों ने बलिदान किए और 15 अगस्त, 1947 को इसकी बेड़ियाँ कटीं तो, किन्तु शरीर विकलांग हो गया और पुत्रों ने यथा स्थिति से समझौता करना ही उचित समझा। अब तक इस भारत भूमि को आर्यवर्त भारतवर्ष के प्रभा मण्डल से हटकर एक और संज्ञा प्राप्त हो गई थी—वह है इण्डिया।

भौतिक रूप से अँग्रेजी सत्ता से संग्राम तो रुक गया था, किन्तु इंडिया और भारत का एक नया संघर्ष चल पड़ा था। भारतीय प्रजा के मतों से जीतकर आने वाले राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री इंडिया के पक्षधर बनकर अँग्रेजों के पद—चिन्हों पर चलकर ही शासन करने लगे थे। इस अवधि में भारतीय मनीषा के कतिपय राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री भी आए, किन्तु उनके चारों ओर इंडिया भक्तों का ही घेरा बना रहा है। इसी ऊहापोह में 66 वर्ष यों ही निकल गए। सन् 2014 के लोकसभा के सामान्य निर्वाचन में सम्पूर्ण भारत की जनता ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा गोधरा से गोहाटी तक भूमिपुत्रों को विजय श्री प्रदान कर दी और दयानन्द, पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा, महात्मा गांधी, सरदार बल्लभ भाई पटेल और मोरारजी भाई देसाई की गुजरात भूमि के प्रतिनिधि नरेन्द्र भाई दामोदर दास मोदी को देश के प्रधानमंत्री के रूप में पदासीन कर दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने हिन्दू (आर्य) होने और कहलाने पर गर्व है।

मोदी प्रथम राजनेता है, जिन्होंने जीतने के बाद काशी में गंगा की आरती की। संसद के केन्द्रीय कक्ष में जब मोदी के सम्मान में आडवाणी जी ने कहा—उन्होंने कृपा करके संगठन को विजय दिलाई है तो मोदी का उत्तर सदैव स्मरणीय रहेगा।

उन्होंने कहा—मेरे लिए यह कृपा शब्द कभी भी उचित नहीं है। मैं भारत माँ की सन्तान हूँ, कोई सन्तान माँ पर कृपा नहीं कर सकती, वह तो केवल समर्पित होकर सेवा कर सकती है जैसे भारत मेरी माँ है, वैसे ही भा.जा.पा. भी मेरी माँ है। मैं उस पर कृपा नहीं—उसकी सेवा कर रहा हूँ, आज ऊँचा हूँ तो अपने बड़ों के कन्धों के सहारे ऊँचा हुआ हूँ, यह उनकी कृपा है।

मोदी ने संसद में प्रवेश करते समय, उसके सदन के द्वार पर मस्तक झुका कर प्रणाम किया। मानो संसद में भारतीयता की आत्मा ने प्रवेश किया हो। नरेन्द्र मोदी इस देश की 125 करोड़ की जनता के हितों की बात करते हुए कहते हैं कि मैं अपने धर्म का आचरण करता हूँ और सभी धर्मों का आदर करता हूँ, किसी भी प्रलोभन के लिए पक्षपात नहीं करूँगा और दूसरे विचारों को मानने वालों के साथ अन्याय नहीं होने दूँगा। यदि यह चुनाव मोदी नहीं जीतते तो इंडियामुखी परधर्मी जीतते और अगले पाँच वर्ष में यह देश भारत की विचार धारा का देश नहीं रह पाता और इंडिया इस पर छायी रहती। हम पूर्व के सूर्योदय की उपेक्षाकर पश्चिम के अस्ताचल के गर्त में गिर जाते। मोदी जी की बड़ी चुनौती यह रहेगी कि वे जनता की अकूत आकांक्षाओं की उडान के बल पर उच्चासन पर पहुँचे हैं, इसलिए पारदर्शितापूर्वक उसकी अभिलाषाओं की पूर्ति का लक्ष्य बनाए रखें। इसका भरोसा उनके इन वाक्यों से लगता है “सबका साथ सबका विकास” यह सरकार सवा सौ करोड़ देशवासियों की है। मोदी ने अपने प्रधानमंत्री पद के शपथ ग्रहण समारोह को न केवल ऐतिहासिक बना दिया, प्रत्युत भारत के चक्रवर्ती गणराज्य की भूमिका का प्रदर्शन कर दिया। उन्होंने दक्षेस के शासक राज नेताओं को न केवल बुलाया ही, प्रत्युत प्रत्येक से अतिथि निवास में जाकर राष्ट्रभाषा में बात की। अल्पकालिक प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर जो मालदीप में आयोजित दक्षेस शिखर सम्मेलन में अपना मौलिक हिन्दी भाषण करके सभी उच्च प्रतिनिधियों की न केवल सराहना अर्जित कर चुके थे, प्रत्युत यह मोदी जी के लिए उनका सफल मार्ग—दर्शन था। अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेशमंत्री के रूप में भी संयुक्त राष्ट्र संघ में यद्यपि हिन्दी भाषण दिया था, किन्तु यह मूल अँग्रेजी का हिन्दी अनुवाद मात्र था।

विदेशी शासनाध्यक्ष अपने देश या भारत में अपनी राष्ट्र भाषा में बात करते हैं, हमारे देश के शासनाध्यक्ष उसे तात्कालिक अँग्रेजी अनुवाद से समझते हैं। यह कार्य कोई दुभाषिया ही करता है। विदेशी राज नेताओं के मध्य हिन्दी में संवाद करते समय दुभाषिया द्वारा यह अनुवाद सम्बन्धित भाषाओं में भी कराया जा सकता है। पड़ोसी धर्म निभाते हुए जो मोदी ने पहल की, वह विशेष श्लाघनीय है। उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को, उनकी माँ के लिए एक सुन्दर शाल भेंट की, तो उन्होंने अपने देश जाकर मोदी की माँ के लिए श्वेत साढ़ी का उपहार भेजा।

पड़ोसियों से स्नेह सम्बन्धों का इससे बड़ा संकेत क्या होगा? कि अल्पकाल में ही समय निकालकर मोदी ने भूटान की ओर विदेशमंत्री सुषमास्वराज ने बांगलादेश की यात्रा एँ की। जो अमेरिका गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए, उन्हें अमेरिका में प्रवेश की अनुमति नहीं दे रहा था, वहाँ के ही सांसद अपनी उच्च प्रतिनिधि सभाओं में मोदी के सम्बोधन हेतु आतुर हो उठे हैं। रेलभाड़ा तथा अन्य वस्तुओं की मूल्य वृद्धि जनता के लिए चिन्ताजनक होती है, इससे यथा संभव बचने की चेष्टा होनी चाहिए। मंत्रिमंडल ने सर्वप्रथम प्रस्ताव पारित करके विदेश में जमा काले धन को भारत लाने का निर्णय तो कर दिया है, किन्तु इसके लिए विश्राम नहीं, निरन्तर होने वाली प्रक्रिया का प्रदर्शन भी होना चाहिए। परतन्त्रता काल में विदेशियों द्वारा लूट और स्वतन्त्रता काल में 66 वर्षों तक भ्रष्टाचार की छूट से भारत माता के शरीर में चुभे हुए काँटों को निकालने में पीड़ा तो होती है, किन्तु इन घावों पर निष्पक्षता, नैतिकता एवं स्नेह सौहार्द का मलहम लगने से कुछ राहत भी मिलती है। लेखक का सुझाव है कि

प्रत्येक माह की एक निश्चित तिथि व समय पर प्रधानमंत्री मोदी का सहानुभूतिपूर्ण दस मिनट का नियमित सम्बोधन दूरदर्शन पर होना चाहिए।

हमारे वे वयस्ती—वयधनी वरिष्ठ व अति वरिष्ठ नागरिक देश में चरित्र—हनन की पीड़ाओं को सहते व देखते हुए इस संसार से विदा हो गए, उनके लिए अमर बलिदानी सरदार करतार सिंह का न्यायालय में दिया गया बयान आश्वस्तकारी है। वे बोले—मैंने सभी जुर्मां को स्वीकार कर लिया है, और मैं यह भी जानता हूँ, कि इनके दो ही दण्ड मिल सकते हैं—एक काला पानी और दूसरा मृत्यु दण्ड। मैं मृत्यु दण्ड को ही पसन्द करूँगा, क्योंकि इससे शीघ्र ही मुझे दूसरा जन्म मिल जाएगा और मैं अपनी मातृभूमि की सेवा अगले जन्म में भी कर सकूँगा। ऐसी दिवंगत आत्माओं को बाल या किशोर अवस्था से ही—वेद माता भी अपना मनोहर उपहार पूर्ण वरदान देते हुए बोल पड़ेगी—“भारतीले सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे। ता नश्चोदयत श्रिये॥” (ऋ. 1, 188, 8) अर्थात् भारत सूर्य का नाम है, उसकी सम्बन्धिनी ‘भारती’ प्रभालोक की देवी है, ‘इला’ भूदेवी है और सरस्वति अन्तरिक्ष की देवी है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे देशवासियों के मस्तिष्क सूर्य—प्रकाश से चमकें, शरीर दृढ़ता व शक्ति से दमकें, और हृदय वायु की भाँति अविरल क्रियाशील के संकल्प से उमरें। देशवासी मातृभूमि, भारत संस्कृत एवं मातृभाषा की गरिमा को बढ़ाकर विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा” ध्वज गान को ध्येयगान—अवदान बनाकर चरितार्थ करते रहें। जय भारत वन्दे मातरम्।

‘वरेण्यम्’ अवन्तिका (प्रथम)

रामघाट मार्ग अलीगढ़, 202001 (उ.प्र.)

### वार्षिक चुनाव

#### आर्य समाज चेरीटेबल ट्रस्ट मकरपुरा रोड़ वडोदरा

श्री आर.पी.वर्मा

प्रधान

श्रीमती लीलाबहेन वेलाणी

उप प्रधान

श्री डॉ. भगवानस्वरप आर्य

मंत्री

श्री भवनभाई दिवाणी

कोषाध्यक्ष

#### आर्य समाज अमर कालोनी लाजपतनगर-IV, नई दिल्ली

श्री जितेन्द्र कुमार डाबर

प्रधान

श्री ओम प्रकाश छावड़ा

मंत्री

श्री वेद भूषण मलिक

कोषाध्यक्ष

#### आर्य समाज उदयरामपुर कोटद्वार गढ़वाल

श्री सत्यपाल आर्य

प्रधान

श्री चन्द्रमोहन

उप प्रधान

श्री मोहन सिंह भारती

मंत्री

श्री राजकमल

कोषाध्यक्ष

**दे**

श में निरंतर बढ़ते अपराधों  
विशेषरूप से अपनी आधी

आबादी पर हो रहे बलात्कार  
जैसे जघन्य अत्याचारों को देखते हुए  
इसके कारणों और दूरगमी समाधानों पर

जब हम विचार करते हैं तो देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कमियाँ और दोष स्पष्ट दिखाई देते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश के नीति नियंताओं ने इस प्रचलित शिक्षा प्रणाली को चुन लिया। इस शिक्षा व्यवस्था को ब्रिटिश गुलामी के दिनों में लार्ड मैकाले द्वारा इस देश को सदा सर्वदा के लिए मानसिक रूप से गुलाम बनाए रखने के लिए लागू किया था। लार्ड मैकाले ने इस शिक्षा प्रणाली को ब्रिटिश साम्राज्य की नीवें मजबूत करने के उद्देश्य से इस सोच के साथ थोपा था कि हम इस देश की भावी पीढ़ी को उसकी संस्कृति की जड़ों से काट देंगे। परन्तु ना जाने क्यों किन कारणों से स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश के नीति नियंताओं ने गुलामी की मानसिकता की प्रतीक मैकाले की शिक्षा प्रणाली को अपनी भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए अपना लिया गया जिसके दुष्परिणाम हम अपने समाज की वर्तमान अवस्था में भुगत रहे हैं। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में तथाकथित विकास के नाम पर विनाश की ओर धकेलती इस शिक्षा में संस्कारों, धर्म शिक्षा आदि का कोई स्थान नहीं था। मैकाले की यह शिक्षा प्रणाली केवल अंग्रेजों की सेवा करने के लिए कलर्क और बाबू बनाने के लिए थी। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में वर्तमान समय में भी हम अच्छे डाक्टर, इंजीनियर, मैनेजर आदि तो बना सकते हैं लेकिन चूंकि इसमें संस्कार देने की कोई व्यवस्था ना होने के कारण इन डाक्टरों, इंजीनियरों और मैनेजरों को हम एक अच्छा संवेदनशील मुनष्य बना पाने में पूरी तरह नाकाम हैं। यदि एक अच्छा डाक्टर एक अच्छा इंसान नहीं है तो ईश्वर

## संस्कारविहीन शिक्षा-बढ़ते अपराध

### ● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

का रूप समझा जाने वाला डाक्टर सेवा की भावना से किए जाने वाले कार्य को धन कमाने का व्यवसाय बना लेते हैं और शायद तभी किडनी चोरी, कन्याभ्रूण हत्या, माँ के गर्भ में लिंग परीक्षण, दवाइयों और जाँच में कमीशनखोरी जैसी घटनाएँ सामने आती हैं और पूरे चिकित्सक समाज को शर्मिंदगी झेलनी पड़ती है। कमोबेश यही स्थिति इस शिक्षा प्रणाली से उत्पन्न प्रत्येक प्रकार के व्यवसायी की हो जाती है।

इसके समाधान पर चिंतन करते समय हम पाते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत उस समय तीन प्रकार की शिक्षा प्रणालियाँ हमारे देश में उपलब्ध थीं। प्रथम—प्राचीनतम गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था, जिसमें शिक्षार्थी ब्रह्मचारी अपने माता-पिता का लाड दुलार छोड़कर आचार्य के गुरुकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करते हुए नया जन्म पाते थे। गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था में बिना किसी जाति, वर्ण या वर्गभेद के सभी ब्रह्मचारी एक साथ गुरुकुल में स्थापित आचार्य की व्यवस्था के अन्तर्गत रहते हुए जीवन की शिक्षा संस्कार प्राप्त करते थे। यह गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था पहली बार महाभारत काल में भंग हुई जब राजा धृतराष्ट्र ने पुत्रों के मोह में अंधे होकर गुरु द्रोण को राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत रहकर दुर्योधन आदि समस्त कौरवों को शिक्षा देने के लिए विवश कर दिया। तब शायद पहली बार दुर्योधन आदि को शिक्षा प्राप्त करते समय यह लगा कि हमारा आचार्य तो हमारे पिता की राज्य व्यवस्था के अधीन एक वित्तपोषित कर्मचारी है। अतएव उनके मने में कभी भी आचार्य के प्रति आदर का भाव नहीं

रहता और उसी विद्यार्थी काल में आया जिद, उद्दंडता और बड़ों के प्रति अनादर का भाव जो आगे चलकर महाभारत के युद्ध का कारण बना। उस समय इस गुरुकुलीय शिक्षा की रक्षा के लिए स्वामी श्रद्धानंद ने शिक्षा यज्ञ में अपना सर्वस्व आहूत करते हुए सफलता पूर्वक हरिद्वार, इन्द्रप्रस्थ, माटिन्डु आदि स्थानों पर गुरुकुल स्थापित किए और इतिहास साक्षी है कि इन गुरुकुलों ने शिक्षा संस्कार देकर स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले कितने क्रान्तिकारी तैयार किए। लेकिन इस गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को उस समय के नताओं ने पुरानी धार्मिक कट्टरता वाली और प्रगति विरोधी मानकर खारिज कर दिया।

दूसरी शिक्षा प्रणाली जो शायद समय के अनुकूल थी। महात्मा हंसराज द्वारा नवीन और प्राचीन को जोड़कर बनाई गई थी, एक अनूठे अंदोलन के रूप में चलाई गई दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षा व्यवस्था को अपना जीवन समर्पित करके चलाने वाले तपस्वी महात्मा हंसराज ने स्थापित किया। जिसमें आधुनिकतम शिक्षा के साथ साथ महर्षि देव दयानन्द द्वारा दिए गए सत्य वैदिक आर्य सिद्धांतों से भी छात्रों का परिचय करवाया जाता था।

परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत शायद मानसिक गुलामी से पूरी तरह ना मुक्त हो पाने के कारण उस समय के नेताओं ने गुलामी की प्रतीक मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को अपना लिया। बच्चों के मन को मल संवेदनशील कच्ची उर्वर मिट्टी की तरह होते हैं। उनमें जैसे बीज बो दिए जाएँ बड़े होकर वैसे ही बन जाते हैं। आज की

शिक्षा व्यवस्था द्वारा हमने बच्चों को केवल पाश्चात्य भोगवाद की प्रेरणा दी और किसी भी प्रकार के कोई संस्कार नहीं दिए। आज वही पीढ़ी युवा अवस्था में संस्कार विहीन होकर अपराधों की तरफ, विशेष रूप से भोगवाद में फँसकर, नारी को भोग की वस्तु मानकर बलात्कार सरीखे अपराध कर रही है। हम बड़ी-बड़ी बहस करते हैं और कानून व्यवस्था के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करते हुए राजनीति करते हैं। पर हमारा ध्यान इस बीमारी के मूल यानि दोषी शिक्षा व्यवस्था पर नहीं जाता बल्कि उसका तो हम और अधिक व्यवसायीकरण करते जा रहे हैं। हम आज अपने बच्चों को बड़े-बड़े डोनेशन देकर उच्च शिक्षा इसलिए दिलवाते हैं कि वह बड़ा होकर किसी एम.एन.सी. में मोटा पैकेज ले गा। जब हम भी एक व्यापारी की तरह बच्चों की शिक्षा में व्यवसाय की तरह इनवेस्ट करते हैं और फिर रिटेन की आशा करते हैं। हमने खुद भी कभी बच्चों को शिक्षा में संस्कार देने का प्रयास नहीं। किया। लेकिन अब भी यदि हम जाग जाएँ और इन सभी बुराइयों की जड़ वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तिन करते हुए नैतिक एवं धर्म शिक्षा को भी शामिल कर लें तो निश्चित रूप से बच्चों को संस्कारवान बना पाएँगे और यही बच्चे कल के अच्छे आदर्श नागरिक बनकर राष्ट्र की मजबूत बुलंद इमारत का आधार बनेंगे और जब हमारे नागरिक संस्कारवान और संभ्रांत होंगे तो अपराध स्वतः कम हो जाएँगे। कोई भी संस्कारवान व्यक्ति नारी पर अत्याचार नहीं करेगा। का भी जाता है—यदि पहले ही सावधानी करती जाए और बीमारी पैदा करने वाले कारणों को ही समाप्त कर दिया जाए तो बीमारी पैदा ही नहीं होगी।

602 जी एच 53 से. 20  
पंचकूला (हरियाणा)

पृष्ठ 04 का शेष

## वेदों में आदर्श जीवन...

-ऋ. 5/15/15

अर्थात् मनुष्य सूर्य और चन्द्र के समान मर्यादित, सुखमय मार्गों का अनुगमन करें, विद्या, धन आदि देने वाले, अहिंसक ज्ञानी जानों की संगति करें।

मन्त्र का संकेत है कि आदर्श जीवन के इच्छुक जनों का संकल्प हो कि जैसे सूर्य और चन्द्र नियमित एवं मर्यादा में रहते हुए गति करते हैं। वैसे अपने जीवन में प्रत्येक मनुष्य नियम में रहे, संगति उत्तम करें। मर्यादित, कर्मशील जीवन ही आदर्श जीवन होता है।

आदर्श जीवन की मधुरता भी आवश्यक अंग है। वेद में कहा है—

घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचता।

-ऋ. 8/24/20

अर्थात् प्रत्येक मनुष्यों को आवश्यक है कि वे धी और मधु से अधिक स्वाद, अनुभूति प्रदान करने वाली वाणी बोलें।

मन्त्र में उपमालंकार द्वारा शिक्षा दी गई है कि आदर्श जीवन वही होता है, जहाँ मधुरता का व्यवहार होता है। मधुर व्यवहार का एक तारतम्य है। मधुरता हृदय की पवित्रता से प्रकट होती है। मधुरता से जीवन स्वर्ग, बनता है, आदर्श बनता है। जीवन को आदर्श बनाने वाली मधुरता सबको अपने वश में कर लेती है। कठोरता कुटिल, कलुषित मन व हृदय के कारण फैलती है। कठोरता से जीवन नरक बनता है। लोक में कहावत है—

कागा काको हरत है कोयल काको देत।

मीठी वाणी बोलकर सबका मन हर लेता।

आदर्श जीवन के लिए वेद का यह भी संदेश है कि—

मा नो निदा ईशत मोत जलिपः।

-ऋ. 8/48/14

अर्थात् जीवन में निदा, आलस्य को हावी न होने दें एवं निरर्थक वचन, दुर्वचन को भी हावी न होने दें।

मन्त्र का तात्पर्य है आदर्श जीवन उनका ही होता है जो निदा, आलस्य, प्रमाद नहीं करते, परिवार, समाज, राष्ट्र की कर्मठता से रक्षा करते हैं, उनके लिए तत्पर रहते हैं। आदर्श जीवन वह है, जिसमें आत्म बड़ाई, बकवास को स्थान नहीं होता। निरालस्य व बकवास रहित जीवन ही आदर्श जीवन है।

आदर्श जीवन बनाने के उपायों में वेदों में ईश्वर की उपासना को भी उपदिष्ट किया है। मन्त्र है—

युज्जन्ति ब्रह्मरुद्धं चरन्तं परि तरथुषः।

रोचन्ते

रोचना दिवि॥

-ऋ. 1/6/1

अर्थात् जो अरुषम्= अंग-2 में व्याप्त, चरन्तम्= संसार में व्याप्त, ब्रह्मनम्= महान् परमेश्वर को, युज्जन्ति= युक्त करते हैं, परि तरथुषः= सब और व्याप्त परमेश्वर को प्राप्त करते हैं, वे, दिवि= सूर्य के प्रकाश के मध्य, रोचना रोचन्ते= परम आनन्द के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

मन्त्र का भाव है जो सर्वत्र व्यापक परमेश्वर की उपासना करते हैं, वे श्लाघा, प्रशंसा की दीप्ति, ज्ञान की दीप्ति, आनन्द की दीप्ति प्राप्त कर लेते हैं। दीप्तिमय जीवन ही आदर्श जीवन होता है।

इस प्रकार संक्षेप में आदर्श जीवन की परिकल्पना में वेदों के ये संदेश हैं।

आर्य कन्या गुरुकुल,

शिवगञ्ज, जि. सिरोही, राजस्थान

ज्ञ पृष्ठ 06 का शेष

## हमारा पर्यावरण व...

चाहिए जिसके लिए हमें वेद के विधान के अनुसार ईश्वरोपासना—संन्ध्या आदि भी करनी चाहिए। यदि ऐसा करेंगे तभी हम स्वस्थ रह सकते हैं अन्यथा रोगों का आक्रमण आयु की किसी भी स्थिति व अवस्था में हो सकता है।

हमारा पर्यावरण मुख्यतः पृथिवी, जल, वायु व आकाश का समूह है। हमारा भोज्य अन्न शुद्ध प्राकृतिक खाद व पानी से उत्पन्न होना चाहिए। आज कल खेतों में प्रयोग किए जाने वाले रासायनिक खाद व कीटनाशकों के छिड़काव भी हमारे स्वास्थ्य को बिगड़ने व असाध्य रोगों को उत्पन्न करने का सबसे बड़ा कारण सिद्ध हुआ है। देश भर में एक मिथ्या—विश्वास पैदा हो गया है कि रासायनिक खाद व कीटनाशकों का छिड़काव से पैदावार अधिक होती है। वास्तविकता यह है कि हम प्राकृतिक खादों व कीटनाशकों से भी वही परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। और रोगों से बच सकते हैं।। यद्यपि बुद्धिमान व विद्वानों को इस विषय से संबंधित तथ्यों का ज्ञान है परन्तु कुछ विशेष कार्य होता दिखाई नहीं दे रहा है। रासायनिक खाद आदि के प्रयोग से उत्पन्न होने वाले अन्न से असाध्य रोगों में कैंसर, हृदय व मधुमेह आदि अनेक भयंकर रोग सम्मिलित हैं। बड़े व छोटे नगरों तथा ग्रामों तक कृत्रिम प्रकार का विषैला दूध, दही व घृत का प्रतिदिन विक्रय हो रहा है। आजकल मुनाफाखोरी से एक ओर कुछ थोड़े से समाज विरोधी लोग मालामाल हो रहे हैं तो दूसरी ओर असंख्य लोग रोगों का शिकार होकर असमय मृत्यु का ग्रास बन रहे हैं समाज के शत्रु धन के लिए ऐसे धिनौने काम करते हैं जिन्हें सरकारी तन्त्र के लोभ की प्रकृति वाले कर्मियों से सहयोग प्राप्त होता है। यह बहुत ही चिन्ता जनक व स्वाधीन देश के लिए अपमानजनक है। हमें लगता है कि हमारी व्यवस्था के संचालकों को लोगों की अनुचित व बुरी प्रवृत्ति का न तो पूरी तरह से ज्ञान है और न उसे समाप्त करने में उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति ही दृष्टिगोचर होती है। भगवान भरोसे ही आज का मनुष्य ऐसी विपरीत परिस्थिति में जीवित है। अतः आवश्यकता है कि बाजार से खरीदी जाने वाली प्रत्येक वस्तु को लेने से पूर्व ग्राहक द्वारा उसकी शुद्धता की पूरी परीक्षा हो अथवा संदिग्ध वस्तुओं का प्रयोग ही न किया जाए बुद्धिमान लोग जानते हैं कि इस समाज विरोधी कार्य को अशिक्षा व चारित्रिक गिरावट के साथ शीघ्र अधिक धन बटोरने का मनोविज्ञान काम करता

है। इनका निवारण करना शिक्षा व समाज शास्त्रियों के साथ सरकार का काम है यदि सरकारी मशीनरी ठीक काम करे और हमारी दण्ड व्यवस्था चुस्त—दुरुस्त हो तो परिणाम कुछ अच्छे हो सकते हैं।

पशु, पक्षी व सभी मनुष्येतर प्राणी भी हमारी सृष्टि और पर्यावरण का अंग हैं ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी प्राणी बनाया है। मनुष्यों के दाँतों की बनावट शाकाहारी प्राणियों के समान है। मांसाहारी प्राणियों के दाँतों की बनावट व आकृति शाकाहारी प्राणियों से अलग प्रकार की होती है। मनुष्य की भोजन पचाने की प्रणाली भी शाकाहारी प्राणियों के समान है। शाकाहारी पशु अपनी सारी आयु स्वस्थ व सुखी रहते हुए व्यतीत करते हैं। उनके सामने सामिष वस्तुएँ या भोजन रखा भी जाए तो भी वह उसका प्रयोग नहीं करते। इसी प्रकार ऐसे लाखों निरामिष भोजी लोग हैं जिन्होंने अपने पूरे जीवन किसी सामिष पदार्थ का भक्षण नहीं किया और 80 व 100 वर्ष के बीच की आयु में भी पूर्ण स्वस्थ हैं। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य स्वभावतः सामिष भोजी नहीं है। सामिष भोजी मनुष्यों की प्रकृति स्वभाव, जीवन, स्वास्थ्य, चरित्र, मन व बुद्धि, काम की प्रवृत्ति यह सभी मांसाहार व मादिरापान आदि से कुप्रभावित होती है। सामिष भोजन करना व मूक प्राणियों को किसी भी प्रकार से दुःख देना। ईश्वर व प्रकृति के प्रति जघन्य अपराध है। जिसका दंड, न कम न अधिक, तो ईश्वर से समय आने पर मिलता ही है। अतः “जिओ और जीने दो” के सिद्धान्त का पालन प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। इस सिद्धान्त में अहिंसा तो है ही साथ में यह सृष्टि व प्रकृति को मानव जीवन के प्रति अधिक उपयोगी व सहयोगी बनाता है। और मानव जीवन को सुखी, स्वस्थ व निरोग रखता है।

अब यह निश्चित हो गया है कि कृत्रिम रासायनिक खाद से हमारी कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति अर्थात् अन्न उत्पादन करने की शक्ति व सामर्थ्य धीरे-धीरे कम व नष्ट होती है और जो अन्न प्राप्त होता है। वह शरीर पोषण कम करता है और साथ ही अनेक असाध्य रोग उत्पन्न कर जीवन को समय से पूर्व मृत्यु का ग्रास बनाता है। अतः कृत्रिम खादों का प्रयोग समाप्त कर और प्राकृतिक खाद का प्रयोग बढ़ाने के लिए योजनाएँ बनाई जानी चाहिए। कृषि नीति की समीक्षा कर ऐसे उपाय करने चाहिए जिससे आज के युवा कृषि व कृषि कार्यों में अपना व्यवसाय चुनें। करने

से क्या नहीं होता। यदि ऐसा करेंगे तब ही हमें स्वास्थ्यप्रद अन्न व भोजन प्राप्त हो सकेगा अन्यथा विनाश व अन्धकार हमारे सामने उपस्थित है। दोनों में से एक को ही चुना जा सकता है। इस क्षेत्र में जागरण इस प्रकार का होना चाहिए कि हमारे राजनैतिक व सरकारी लोग किन्हीं आर्थिक व अन्य कारणों से हमारे स्वस्थ्य से खिलवाड़ न कर सकें।

आजकल हमारे देश में लोगों के पास जो धन व सुख की सामग्री है उसमें भारी असामान्यता व अन्तर है। कुछ लोगों के पास अथाह धन व सुख के साधन हैं तो कुछ के पास जीने के लिए दो समय का भोजन भी नहीं है। करोड़ों लोग बिना पर्याप्त भोजन, शिक्षा व सुख—सुविधाओं के अपना जीवनयानन करते हैं। रोग होने पर ऐसे लोग बिना उपचार के मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। यद्यपि हमारे चिकित्सकों द्वारा चिकित्सक बनने पर यह शपथ ली जाती है कि वह हर रोगी का उपचार करेंगे परन्तु फिर भी आम आदमी डाक्टरों के पास जाने की हिम्मत नहीं कर पाता। आम आदमी तो क्या आज मध्यम श्रेणी का व्यक्ति भी डाक्टर के पास किसी छोटी से छोटी बीमारी का उपचार कराने के लिए जाते समय डरता है कि कहीं लेने के देने न पड़ जाएँ। आज चिकित्सा के नाम पर कुछ लोग लूट करते हैं। अनावश्यक महँगे टैस्ट कराए जाते हैं, चाहे रोगी का सामर्थ्य हो या न हो। महँगी दवाएँ लिखी जाती हैं। जिसका एक कारण इसमें कमीशन का लिया जाना भी होता है। इसमें कुछ सत्यता तो है ही। इसके अनेक उदाहरण भी सामने आ चुके हैं। यह एक प्रकार का चारित्रिक प्रदूषण है जो कि समाज व मनुष्य के अस्तित्व के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इसे बढ़ाने नहीं देना चाहिए अन्यथा

यह मनुष्य में दया, करुणा, प्रेम, ममता, संवेदना आदि सभी कुछ समाप्त कर समाज के प्रत्येक मनुष्य को दूसरे के भोग की वस्तु बना कर रख देगा। हमने ऐसी सत्य घटनाएँ सुनी, पढ़ी व जानी हैं। जब चिकित्सक ने रोगी को बिना बताए उसकी किडनी निकाल ली और असत्य बात कह कर उसे समझाया गया कि उसके जीवन की रक्षा के लिए आपरेशन करना पड़ा। वह समय—समय पर दवा लेता रहे। यह घोर चारित्रिक पतन का प्रमाण है। एवं चारित्रिक प्रदूषण का उदाहरण है। यह सब समाज के प्रदूषण के उदाहरण सभी व्यवसायों में देखने में आते हैं। यह सब आधुनिक शिक्षा भ्रष्टाचार की पोषक है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मुख्यतः चारित्रिक व नैतिक वृष्टि से संस्कारित व चरित्रवान नागरिक उत्पन्न करना है। व्यवस्था में कमियाँ तो स्वीकार करनी ही पड़ेगी। परन्तु दुःख इस बात का है इस रोग को अभी पहचाना ही नहीं गया है, उपचार कब होगा, होगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता।

अतः पर्यावरण की सुरक्षा व उसके खतरों का जब उल्लेख होता है तो उसे सभी पहलुओं से देखना उचित हो। रोग पता होने पर ही समाधान हो सकता है। समाधान तभी होगा जब हममें रोग को रोग कहने व उसका उपचार करने की दृढ़ इच्छा होगी। कोई भी कार्य असम्भव नहीं होता है जहाँ इच्छा शक्ति कमजोर नहीं होगी। आज अनेक मनुष्य पर्यावरण के शत्रु बने हुए हैं। शत्रुता को छोड़कर सभी को प्रकृति को अपना मित्र बनाना चाहिए और उसके साथ मित्रता का व्यवहार करना चाहिए, इसी में सबकी भलाई है।

पता: 106 चुक्खवाला-2  
देहरादून-2480 01  
दूरभाष-09412985121

## श्री जगतराम आर्य (भजनोपदेशक) नहीं रहे

आर्य समाज, कुरुक्षेत्र से प्राप्त एक विज्ञप्ति के अनुसार हरियाणा के प्रतिष्ठित भजनोपदेशक श्री जगतराम आर्य का उनके गाँव अलाहर, जिला-यमुना नगर में आकस्मिक निधन हो गया। श्री जगतराम आर्यजी 90वर्ष की आयु में अपने पीछे एक भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

श्री जगतराम जी के दिवंगत होन से आर्य समाज परिवेश में भजनोपदेशकों की एक समृद्ध परम्परा का वाहक अब हमारे बीच नहीं है। श्री आर्यजी की शोक-सभा रेलवे रोड, कुरुक्षेत्र में संपन्न हुई जिसमें हरियाणा और आसपास के प्रदेशों के प्रतिष्ठित आर्य विद्वानों, भजनोपदेशकों और संन्यासियों ने भाग लिया। उनके सुयोग्य सुपुत्र श्री राकेश आर्य, श्री दिनेश आर्य, श्री सुभाष आर्य और श्री राजेश आर्य ने शोक-सभा की व्यवस्था की।

‘आर्य जगत्’ परिवार की ओर से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा का शांति प्रदान करे और शोक संतृप्त परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति दे।



## पत्र/कविता

# हमने उन्नति की सीमा व्यक्ति या परिवार तक बना ली है

खाड़ी देशों की यह मेरी दूसरी यात्रा है। यहां मैं आर्य परिवारों को सांख्य दर्शन का अध्यापन, ध्यान, प्रवचन, शंका समाधान करता हूँ। जब भी अवकाश मिलता है, आस पास के देशों में भ्रमणार्थ जाता हूँ। दुबई देश में रहते हुए मैंने आबु धाबी, शारजाह अजमान फुजैराह, रस्स अलू खैमाह आदि सात देशों की यात्रा की है। मुझे बहुत कुछ नया ज्ञान विज्ञान, प्रत्यक्ष देखने, सुनने, पढ़ने को मिला, यह मेरी 19वीं विदेश प्रचार यात्रा है।

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक इन खाड़ी देशों में, खारे समुद्र, रेत के टीलों, गर्म धूल भरी हवाओं के सिवाय कुछ भी नहीं था। अत्यन्त प्रतिकूल प्राकृतिक विपन्न जलवायु में ये कैसे जीते थे, यह कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लेकिन आज वहीं पर अत्याधुनिक तथा विशाल, 50-80-100 मंजिले आकर्षक भवनों को देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है, मन में विचार होता है कि कहीं स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं, कोई जादू तो नहीं !!! वास्तविकता यह है कि यह सब मन में किसी उद्देश्य को बनाकर उसको पूरा

## देश से बड़कर कुछ नहीं

बचाकर भारत का आन बान शान रखना  
वसीयत करके वतन के नाम जान रखना  
एकता अखंडता की, सभ्यता परम्परा की  
दुनिया भर में भारत की पहचान रखना  
तिरंगे की कसम भारत को बदनाम मत करो  
दुश्मनों से बचाकर ये धरती आसमान रखना  
बच्चा-बच्चा सच्चा देश भक्त, देश प्रेमि हो  
याद हमेशा शहीदों का अमर बलिदान रखना  
लिखकर हर तरफ, हर दर और दीवार पर  
वंदे मातरम् जय जवान-जय कियान रखना  
भ्रष्टाचार अत्याचार को जड़ से उखाड़ दो  
सत्ता और शासन में विद्वान चरित्रवान रखना  
अनगिनत तयाग बलिदान का अंजाम है आजादी  
हर हाल में मातृ भूमि का मान सम्मान रखना

नरेश हमिलपुरकर

चिटगुप्पा-585412, बीदर (कर्नाटक)

मो.-08951311253

करने हेतु प्रबल भावना, दृढ़ संकल्प,  
परम पुरुषार्थ तथा घोर तपस्या का  
परिणाम है।

मैंने सुना कि यहां के (शेख) राजा, जब अमेरिका, यूरोप आदि देशों की यात्रा करते हुवे वहां की भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, सब प्रकार की उन्नति देखते थे तो उनके मन में यह विचार उत्पन्न होते थे कि क्या मेरे देश में ऐसे भवन, चौड़ी सड़कें, यातायात के साधन, होटल, रिसोर्ट, क्लब, बाग, बगीचे, मनोरंजन के साधन, व्यापार मण्डी, सुख-सुविधाएं बनायी जा सकती हैं, जिनके कारण लोग आकर्षित होकर आवें, रहें?

बस एक दिन संकल्प कर लिया, योजनायें बनायीं गईं, अमेरिका, यूरोप, एशिया के देशों से सम्पर्क किया, मंत्रालय हुई, अनुबन्ध हुवे, लोहा, सीमेंट, पत्थर, लकड़ी, इंजीनियर, श्रमिक, आदि जिन जिन, साधनों की अपेक्षा थी, प्राप्त किये गये। कार्य प्रारंभ हो गया, शेख के मन में एक ही भावना कि कोई भी निर्माण हो, अद्भुत, अद्वितीय आकर्षक होना चाहिए। समुद्र में मीलों तक पत्थर, कंकर, रेत डालकर, पहाड़ बनाकर उन पर आकाश को छूने वाली, ऊँची, भव्य इमारतें बनायी गयीं। और सुन्दर नगर बसाया गया। दूसरी तरफ भूमि में गहरी खाईयां खोदकर समुद्र के पानी को नहरों के रूप में फैला दिया गया। अन्य देशों से

जहाजों में उपजाऊ मिट्टी मंगाकर, रेत के मैदानों में बिछाकर, बड़े-बड़े, उद्यान, खेत, बगीचे, उपवन, वाटिकाएं बना दीं। जहां घास का एक तिनका नहीं उगता था वहां पर रंग-बिरंगे, फूल-फल, घास के मैदान बना दिये। बसों, रेलों, ट्रामों, भण्डारों आदि की समुचित व्यवस्था करके सर्वत्र आवागमन को सरल बना दिया।

कृत्रिम रूप से बने, सभी साधन सुविधाओं से युक्त, उत्तम व्यवस्था, कुशल प्रबन्ध, अनुशासन, दण्ड व्यवस्था के कारण विश्व के 100 से भी अधिक देशों के नागरिक यहां अनेक प्रकार के व्यवसायों में लगे हुवे हैं। अमीरात के देश विश्व का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं पर्यटन का केंद्र बन गये हैं। इन देशों के मुख्य नगरों में घूमते हैं तो यह भ्रम हो जाता है कि कहीं हम लंदन, पैरिस, टोक्यो, सिंगापुर में तो नहीं हैं?

इन देशों के वैभव, सम्पदा, विकास, उन्नति को देखकर, वही प्रश्न मन में उपस्थित होता है कि ये देश अत्यन्त प्रतिकूल वातावरण, जलवायु तथा विपन्नता के होने हुवे, कुछ ही वर्षों में देश को स्वर्ग वायु तथा विपन्नता के होने हुवे, कुछ ही वर्षों में देश को स्वर्ग के समान सम्पन्न सुन्दर बना सकते हैं तो हम क्यों नहीं? जहां पर हर प्रकार की प्राकृतिक सम्पदा, साधन, अनुकूलता हो। जिस देश में शिल्प, कला, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान,

संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, वेशभूषा, धर्म, आचार, विचार, व्यवहार, सिद्धान्त तथा श्रेष्ठ गौरवमयी आदर्श परम्परायें हजारों-लाखों वर्षों से चली आ रही है, वह उन्नत क्यों नहीं हो रहा है? इन देशों के समक्ष हमारे इस आर्यवर्त की ऐसी दुदर्शी क्यों है? हमारे देश के अधिकांश लोग और उनका जीवन दयनीय, निकृष्ट, विपन्न, घृणित तुच्छ, हेय क्यों हैं? हम चाहते ही नहीं हैं, चाहें तो हो सकता है।

विश्व का भ्रमण करने के पश्चात् मेरी समझ में यही आया है कि हमने उन्नति की सीमा व्यक्ति या परिवार तक बना ली है। हमारे नगर, राज्य, राष्ट्र का नाम विश्व में हो, लोग हमसे प्रेरणा लें, सीखें, अनुकरण करें, यहां आवें, हमारा सम्मान करें, ये विचार कभी भी मन में उठते नहीं हैं, तो कार्य क्या होगा है देव! हमारे देशवासियों को दयनीय, दशा से उबार कर, सम्पन्न बनने की प्रेरणा आप ही प्रदान करो। हम अपनी लुप्त हुई गरिमा को पुनः जीवित करके, विश्व गुरु बनकर “कृष्णन्तो विश्वमार्यम्” के आपके वेद उद्घोष को साकार करें, यहीं प्रार्थना है स्वीकार करें—

ज्ञानेश्वरार्थ  
आबुधाबी

\*\*\*\*\*

# समझौ तुम संत बन गये

क्रोध में जो इच्छा में, पूरी करो। लेकिन क्रोध आने पर केवल पांच मिनट चुप रह जाओ। शांत रह जाओ। मैं तुमसे सिर्फ पांच मिनट मांग रहा है। छठवा मिनट तुम्हारा है। मुझे क्रोध के प्रारम्भिक क्षणों के सिर्फ पांच मिनट दे दो।

मैं दावा करता हूँ कि इन पाँच मिनटों में क्रोध की हवा निकल जायेगी, गुस्से का दम निकल जायेगा। क्रोध की आयु बहुत अल्प है। क्रोध ज्यादा देर जीवित नहीं रहता। पांच मिनट शांत रहना सीख गये तो समझो तुम संत बन गये।

कृष्ण मोहन गोयल  
113-बाजार कोट  
अमरोहा-244221

\*\*\*\*\*

## जरूरतमंद बच्चों के लिए आर्य समाज ने दी शिक्षा सामग्री

**ज**

रुरतमंद एवं प्रतिभावान छात्रों को शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से दैनिक समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर' द्वारा चलाये जा रहे मिशन, शिक्षा अभियान, के अन्तर्गत आर्य समाज कोटा ने सहयोग देकर अपनी जिम्मेदारी निभाई। इसके अन्तर्गत आर्य समाज कोटा ने जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में



दैनिक भास्कर कार्यालय कोटा में जाकर शिक्षण सामग्री भेट की।

इस अवसर पर आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि सभी को शिक्षा मिले। इसी उद्देश्य से आर्य समाज द्वारा विगत कई वर्षों से कोटा शहर के सरकारी तथा ग्रामीण क्षेत्र के अनेक सरकारी विद्यालयों में जाकर जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को इसी प्रकार शिक्षण सामग्री दी जा रही है।

## डी.ए.वी. मानसा के हिमांशु गर्ग को पांच वर्षों तक मिलेंगी छात्रवृत्ति

**ए**

स डी.के.एल डी.ए.वी. सी सै. पब्लिक स्कूल, मानसा के बारहवीं कक्षा के छात्र हिमांशु गर्ग पुत्र श्री जीवन कुमार ने सी.बी.एस. ई की वार्षिक परीक्षा (2013-14) में

96% अंक प्राप्त करते हुए गणित में शत प्रतिशत अंक प्राप्त करके उच्चतम श्रेणी के 1 प्रतिशत विद्यार्थियों में अपना नाम सम्मिलित करवाया। इस उपलब्धि के लिए मानव संसाधन विकास मंत्री

स्मृति जुबिन इरानी ने उन्हें बधाई पत्र भेजा है। विज्ञान और तकनीक मंत्रालय ने इस प्रतिभाशाली छात्र को उच्चतर शिक्षा के लिए लगातार पाँच वर्षों तक 80 हजार रुपए प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति देने की घोषणा की है।



## नव सत्र का आरंभ हुआ यज्ञ से

**आ**

र्य समाज कोटा ने अन्नपूर्णा विद्यालय कोटा के नवसत्र का प्रथम दिवस का प्रारंभ यज्ञ किया। यज्ञ से पूर्व मुख्य यजमान दंपत्ति विद्यालय के निदेशक डॉ. रामाराव, प्राचार्या डॉ. लक्ष्मी राव, विद्यालय के अध्यापक-अध्यापिकाओं सहित छात्र-छात्राओं ने वेद मंत्रों से अरविन्द पाण्डेय के पौराहित्य में आहूतियां दी।

कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक प्रार्थना मंत्रों से भावार्थ सहित सामूहिक रूप से गान किया। उपस्थित सभी ने ध्यान लगाकर प्रार्थना मंत्रों का उच्चारण



किया। सभी छात्र-छात्राओं ने प्रसन्नता व उत्साह के साथ गायत्री मंत्र उच्चारण करते हुए यज्ञ में आहूतियां दी।

विद्यालय की प्राचार्य डॉ. लक्ष्मी राव ने कहा कि यज्ञ के प्रारंभ से अध्यापिकाओं एवं बालक-बालिकाओं

को भी अच्छा लगा। यज्ञ से बच्चों में संस्कार एवं सकारात्मक सोच आती है। विद्यालय निदेशक डॉ. रामाराव ने धन्यवाद देते हुए कहा कि समय-समय पर आर्यसमाज द्वारा छात्रों की उन्नति के लिए यज्ञ के साथ विचार दिये जाते हैं। बच्चों में मानव बनने के गुण आते हैं। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस अवसर पर, श्री अर्जुन देव चड्ढा, श्री राम प्रसाद याकि एवं श्री जे.एस दुबे ने छात्रों को को संबोधित किया और लक्ष्य प्राप्त करने के गुरु बताये।

## डी.ए.वी. बृज विहार गाजियाबाद में लगा वैदिक चेतना शिविर

**डी.** ए.वी. पब्लिक स्कूल बृज विहार गाजियाबाद (उ.प्र.) के तत्वावधान में एक "वैदिक चेतना शिविर" का सफल आयोजन किया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रबन्धक श्रीमान एस सी गुप्ता जी रहे। आपने विद्यार्थियों के हित में अनेक

विध चर्चा की साथ ही माता पिता और सुजाता ज्ञा ने भी अपने अनुभवों के अध्यापकों के प्रति दायित्वों का वर्णन आधार पर ज्ञान की कार्मा प्रशस्ति किया।

शिविर के संचालक सूर्य देव शास्त्री ने समय-समय पर अपना उद्बोधन योगासन, प्राणायाम, ध्यान, भजन, दिया। शिविर में सहयोगी के रूप में श्री उपदेश एवं सतत जागरण की प्रेरणा करुणाकर शर्मा, श्री कृष्णपाल सिंह, पाकर भावी जीवन में माता-पिता एवं श्रीमती डॉ. गरिमा शास्त्री, श्रीमती अध्यापकों के आशीर्वाद से आगे बढ़ने को

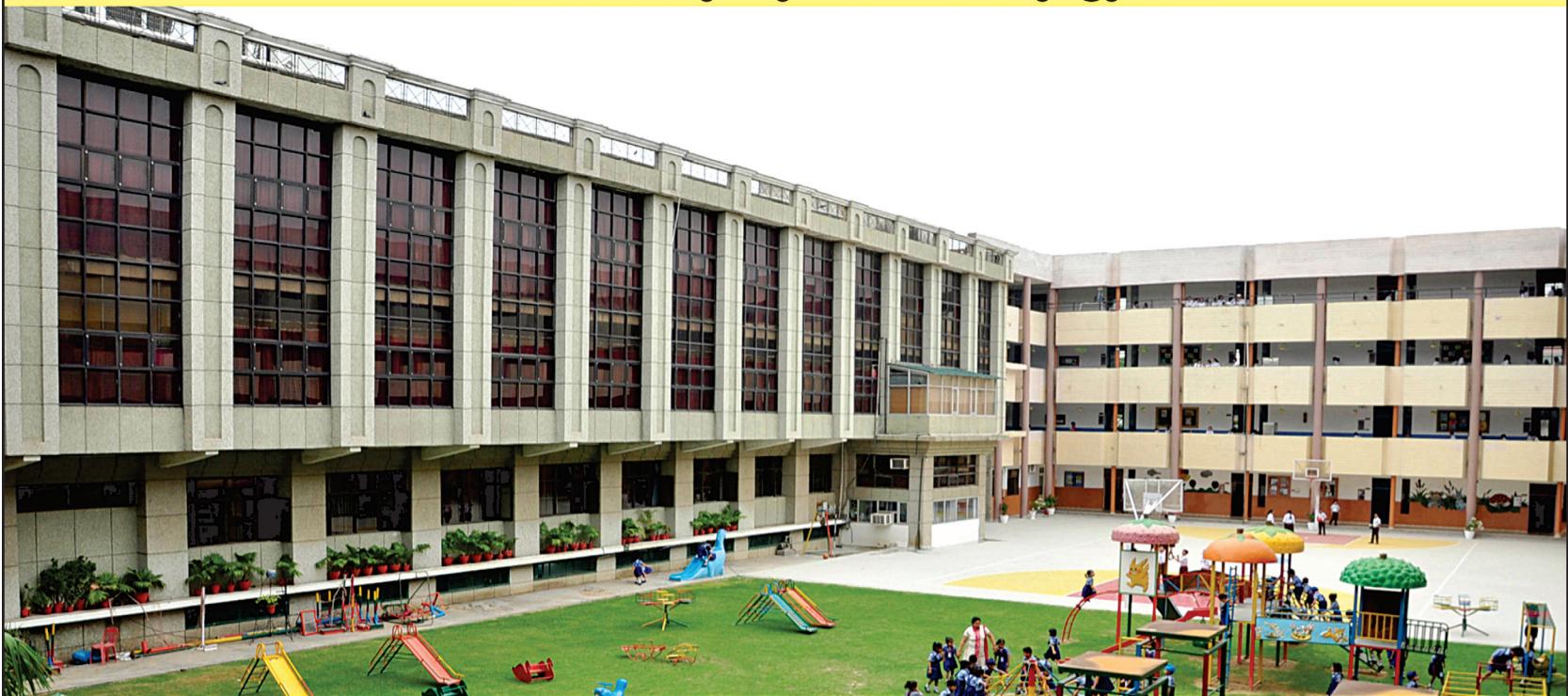
सीख प्राप्त की। बच्चों ने माता-पिता एवं अध्यापकों का नित्य अभिवादन करने का व्रत लिया।

शिविर के समापन अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या ने अपना आशीर्वाद एवं भावी जीवन की शुभकामनायें दीं। श्रेष्ठ शिविरार्थियों को पुरस्कृत कर सम्मान बढ़ाया गया।



# ओ॒श्म् DAV PUBLIC SCHOOL

Bhai Randhir Singh Nagar, Ludhiana Phones : +91 161 2458740 - 43, Fax : +91 161 2457780  
[www.davbrsnagar.org](http://www.davbrsnagar.org) E-mail : [davbrsnagar@gmail.com](mailto:davbrsnagar@gmail.com)



## ACADEMIC ACHIEVEMENTS (2013-14)

- 57 Students of XII Scored 90% and above marks in AISSCE conducted by CBSE.
- 58 Students of X Scored CGPA 10 in CBSE Examination.
- 166 Students of X Scored CGPA between 9.0-10.0.
- 8 Students got selected for MBBS & 2 in BDS.
- 2 Students got selected in IIT, Delhi & 1 Student in BITS - PILANI.



## Stream Wise Toppers

	<b>NON-MEDICAL</b> <b>Ujjawal Singla</b> (96.6%) (5 A1)		<b>MEDICAL</b> <b>Shivansh Aggarwal</b> (93.8%) (5 A1)		<b>COMMERCE</b> <b>Kirandeep Kaur</b> (96.2%) (5 A1)
--	--	--	---	--	---

## Awards and Honours won in Competitions



Mukul Grover, Kartik Garg and Vaibhav Vig of XI  
 Bagged People's Choice Award in  
 IT based competition (National Level)  
 conducted by University of Technology Sydney,  
 Australia.

- School bagged 1st Prize at State Level Science Exhibition conducted by CBSE.
- Large Number of students brought laurels in IMO, IEO, NCO and NSO by winning Cash Prizes and Merit Certificates at National Level.

## SPORTS (2013-14)



Harshveer Singh Sekhon has been selected for Under-19 ASIAN & WORLD ROLLER SKATING CHAMPIONSHIP going to be held in China & Argentina respectively.

### School Students who got selected for National Level Championships:

Badminton (Open National and SGFI (School Games Federation of India))	- 1
Skating (Open National and SGFI)	- 2
Table Tennis (SGFI and CBSE National)	- 5
Swimming (SGFI and CBSE National)	- 4
Swimming (DAV National)	- 3
Handball (DAV National)	- 16
Handball (SGFI)	- 3
Basketball (DAV National)	- 12

**Mr. Punam Suri**  
Chairman

**Mrs. P.P. Sharma**  
Regional Director

**Mr. B.B. Sharma**  
Manager

**Mrs. Jaswinder K. Sidhu**  
Principal